जनशाला कार्यक्रम
राजस्थान

सफर

बस्तियों के बच्चों की स्कूल तक पहुंच

372.119
JAI

जनशाला कार्यक्रम, RSTB भवन, झालाना औद्योगिक क्षेत्र
जयपुर

विषय-सूची

सफरः बस्तियों के बच्चों की स्कूल तक पहुंच	5
अनुभव	12
समुदाय का कथन	25
शिक्षकों की जुबानी	26
बच्चों के मुख से	28
शराबबंदीः थियेटर कार्यशाला - एक अनूठा अनुभव	30
समुदाय से सवाल करने पर प्रतिक्रियाएं	31
कार्यक्रम की सफलता के आयाम	32

352.119
JAI

अपनी बात

शहरी कच्ची बस्तियों में वंचित वर्ग के बच्चों के लिए *अनिवार्य एवं बेहतर शिक्षा सुविधा* उपलब्ध करवाने की पहल करते हुए इस कार्य को एक चुनौती के रूप में अंगीकार किया गया। समुदाय, शिक्षक एवं बच्चों के बीच में लंबे समय से पसरी चुप्पी को तोड़ने के सार्थक संवाद किये गये।

संवादों के इस सफर में छोटे-छोटे सफल अनुभवों से परियोजना में काम कर रही टीम को उर्जा मिलती रही हैं। जड़ताएं टूटी है, कक्षा कक्ष मुखर व जीवन्त हुए हैं, जिन तक कोई नहीं पहुंचा वहां उन्हीं की सहभागिता से शैक्षिक संरचनाएं बनी हैं। शिक्षक, समुदाय व बच्चों के संबंधों के नये संसार सृजित हुए हैं।

बच्चों के हंसते मुस्कुराते चेहरे, कक्षाओं में बाल गीतों की गूंज, शिक्षा को सहज सुलभ बनाने के शिक्षकों द्वारा किये जा रहे नित-नूतन प्रयास बताते है कि *पढ़ना-पढ़ाना* अब बोझ नहीं रह गया हैं। माताओं की आंखों में उम्मीद जगने लगी है कि बच्चे अब कुछ सीख सकेंगे। सरकारी स्कूलों के प्रति लोगों का नजरिया बदला है वहीं सामुदायिक जनशालाओं में *'अपना स्कूल'* की भावना विकसित हुई है।

यह सभी संभव हो पाया है कार्यक्रम से जुड़ी, सरोकारी टीम के सामूहिक प्रयास से।

इन अनुभवों को कलमबद्ध करने की कोशिश *सफर* में की गई है। कुछ और अनुभवों को गढ़ने का यह सफर जारी रहेगा।

इसी प्रयास के साथ -

उषा बापना
राज्य कार्यक्रम समन्वयक
जनशाला कार्यक्रम, राजस्थान

सफरः बस्तियों के बच्चों की स्कूल तक पहुंच

संयुक्त राष्ट्र प्रणाली एवं भारत सरकार के सहयोग से संचालित जनशाला कार्यक्रम, राजस्थान में शहरी कच्ची बस्तियों के शिक्षा से वंचित बच्चों के लिए एक प्रयास है।

जनशाला कार्यक्रम प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के लिए प्रारम्भ किया गया, वह कार्यक्रम है जिसमें उद्देश्य शहरी कच्ची बस्तियों में रह रहे शिक्षा से वंचित वर्ग के बालक-बालिकाओं के लिए जनसहभागिता के माध्यम से आवश्यक व बेहतर शिक्षा सुविधा उपलब्ध करवाने की एक सार्थक पहल है। राज्य में इस कार्यक्रम की शुरूआत अप्रैल 1999 से की गई, जिसके अन्तर्गत जयपुर, अजमेर, भरतपुर एवं जोधपुर शहरों में कार्य किया जा रहा है।

जनशाला कार्यक्रम भारत सरकार एवं यू.एन. संस्थाओं (युनिसेफ, यूएनडीपी, यूएनएफपीए, यूनेस्को, आईएलओ) के सहयोग से 9 राज्यों - आन्ध्रप्रदेश, झारखण्ड, कर्नाटक, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा एवं राजस्थान में संचालित किया जा रहा है। राजस्थान में यह कार्यक्रम राजस्थान सरकार द्वारा राजस्थान शहरी कच्ची बस्ती जनशाला समिति का गठन कर संचालित किया जा रहा है। शहरी क्षेत्र में यह राजस्थान राज्य का अनूठा प्रयोग है, जो प्रारम्भ से ही चुनौतीपूर्ण रहा है।

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत दो प्रकार की शालाओं का संचालन किया जा रहा है:

1. राजकीय जनशाला - बस्तियों के निकटस्थ अथवा ऐसे विद्यालय जो वंचित वर्ग के बच्चों के लिए अध्यापन का कार्य कर रहे हैं इनमें समुदाय की सहभागिता सुनिश्चित करना एवं प्रशिक्षण एवं समर्थन से शिक्षकों का सशक्तीकरण करना प्रमुख कार्य है।
2. सामुदायिक जनशाला - पूर्णकालिक ऐसे विद्यालय जो शहरी शिक्षण सुविधाहीन कच्ची बस्तियों में स्वयंसेवी संस्थाओं के सहयोग से संचालित किये जा रहे है। सामुदायिक जनशाला का संचालन विभिन्न गतिविधियों एवं अनुभव की एक यात्रा है जो अधिक लम्बी तो नहीं है किन्तु विभिन्न सहभागियों के साथ काम करने का नवीन प्रयोग अवश्य है।

स्वयंसेवी संस्थाओं का चयन

राज्य कार्य योजना तैयार करते समय बोध शिक्षा समिति (स्वयंसेवी संस्था) ने इन सामुदायिक जनशालाओं के संचालन का जिम्मा तकनीकी समर्थन देने के साथ-साथ लिया था किन्तु योजना बनाने एवं कार्यक्रम की क्रियान्विति के समय के लगभग एक वर्ष के अन्तराल के बीच परिस्थितियों में आए बदलाव के कारण बोध ने केवल तकनीकी समर्थन देने पर ही अपनी सहमति दी। कार्यक्रम की कार्यकारिणी ने यह निर्णय लिया कि खुले विज्ञापन के माध्यम से विभिन्न जोन्स (नगर

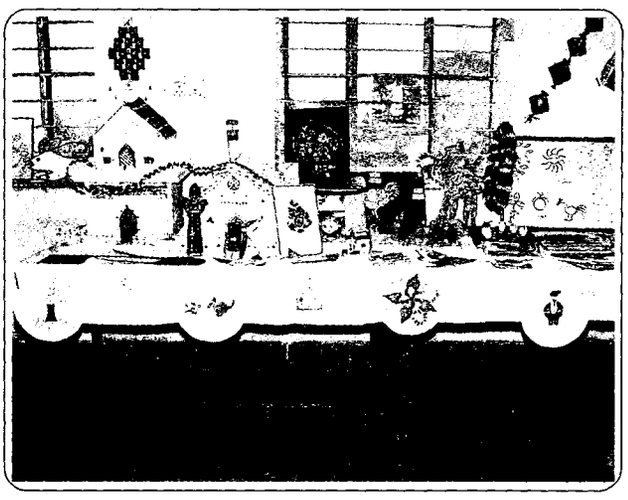

निगम द्वारा निर्धारित) के लिए अलग-अलग स्वयंसेवी संस्थाओं का चयन उनके अनुभव एवं क्षेत्र में उनकी पहचान के आधार पर किया जाये एवं उनके माध्यम से सामुदायिक जनशालाओं का संचालन करवाया जाये।

संस्था के चयन के पश्चात शहर के आधारभूत सर्वेक्षण के माध्यम से प्राप्त जानकारियों के आधार पर पहले दौर में अधिकतम स्कूल नहीं जाने वाले बच्चों की बस्तियों का चयन किया गया। बस्ती के चयन के समय निम्न बातों पर ध्यान दिया गया:-

- जहां बहुत अधिक संख्या में बच्चे स्कूल नहीं जा रहे हो।
- एक किलोमीटर की परिधि में कोई राजकीय विद्यालय उपलब्ध नहीं हो।
- समुदाय विद्यालय खोलने की आवश्यकता महसूस करता हो। स्थान एवं अन्य सहयोग देने को तत्पर हो।

शिक्षक चयन

सामुदायिक जनशाला के लिये शिक्षकों का चयन बहुत अहम् क्षेत्र है। शिक्षक ही इस कार्यक्रम की महत्वपूर्ण एवं सशक्त कड़ी है, अतः शिक्षकों का प्रारम्भिक चयन बस्ती में से या आसपास से, न्यूनतम योग्यता हायर सैकण्डरी/एस.टी.सी. रखने वाली महिला या पुरुष का, संस्था द्वारा किया गया। उसके पश्चात अन्तिम चयन हेतु एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें स्वयंसेवी संस्था, बोध शिक्षा समिति एवं राज्य कार्यालय, जनशाल कार्यक्रम के प्रतिनिधियों के सहयोग से उनके मौलिक चिन्तन, अभिरुचि एवं क्षमताओं को देखते हुए चयन किया गया। चयन के पश्चात संस्थाओं ने इन अध्यापकों को कुछ समय तक बस्तियों में भेजकर बस्तियों की प्रकृति, समुदाय के साथ काम करने की बारीकियों एवं आगे आने वाले चुनौतियों से परिचित भी करवाया।

शिक्षक प्रशिक्षण

किसी भी कार्यक्रम की सफलता निर्भर करती है उन कौशलों पर जो कि कार्य को सुचारू व सफलतापूर्वक चलाने के लिए परियोजना में कार्यरत व्यक्तियों में अपनी पूर्ण क्षमताओं के साथ मौजूद हो। इस कार्यक्रम में शालाओं में कार्यरत शिक्षकों को जिन कौशलों की आवश्यकता थी उन्हें उभारने और पोषित करने का पूरा प्रयास किया गया। जनशालाओं के लिए चयनित शिक्षकों को प्रशिक्षित करने की जिम्मेदारी बोध शिक्षा समिति ने कार्यक्रम में तकनीकी समर्थन समूह के रूप में उठाई।

अध्यापकों को दिया गया 2 माह का प्रत्येक प्रशिक्षण किसी मूर्तिकार द्वारा सामान्य से पत्थर को एक सुन्दर प्रतिमा के रूप में तराशने जैसा रहा। इन प्रशिक्षणों ने एक साधारण व्यक्ति को एक जिम्मेदार व योग्य शिक्षक के रूप में बदल दिया। उनमें नेतृत्व एवं प्रबंधन की क्षमता को उभारने का प्रयास किया गया।

प्रत्येक प्रशिक्षण का समय प्रातः 9.30 से शाम 5.00 बजे तक का रखा जाता रहा है। प्रशिक्षण में परिचय गतिविधियों के दौरान न केवल आपसी परिचय करवाया जाता है वरन् कुछ खेल गतिविधियों द्वारा कुछ ही घंटों में आपसी शर्म व झिझक जैसी स्थितियां भी समाप्त करने का प्रयास किया जाता है। उसके बाद सभी यहां एक दूसरे के साथी एवं सहयोगी बन जाते है जिन्हें 2 माह का प्रशिक्षण आने वाले समय में एक-दूसरे के सहयोग से मिलकर पूरा करना होता है। 2 माह के प्रशिक्षण के दौरान रोजमर्रा की गतिविधियों में व्यायाम, गुंजन, बाल-गीत, चेतना गीत, डायरी पठन समस्या व उसके समाधान व हल खोजने के अतिरिक्त भाषा, गणित, पर्यावरण आदि विषयों पर शिक्षकों की प्रारम्भिक समझ विकसित करने का कार्य किया जाता है। इसके अतिरिक्त सुनने-सुनाने, बोलने जैसे कौशलों को विकसित करने के लिए इन विषयों पर विस्तृत चर्चा भी की जाती है। साथ ही मन से इनका कितना गहरा संबंध है और मन हमारी भौतिक व मानसिक स्थितियों को कितना प्रभावित करता है, इसे समझाने के लिए मन विषय पर विस्तृत चर्चा की जाती है। मन को नियंत्रित करने के लिए ध्यान व श्वास नियंत्रण क्रिया के उपयोग को समझाया जाता है। ध्यान व श्वास नियंत्रण व गुंजन जैसी क्रियाओं की मौखिक क्रियान्विति हेतु प्रतिदिन अभ्यास भी करवाया जाता है। प्रशिक्षणार्थियों को बोध शालाओं एवं बाद में सामुदायिक तथा राजकीय जनशालाओं में अवलोकन के लिए भेजा गया, जिससे पढ़े और सुने हुए ज्ञान को ऑखों से देखकर समझा जा सके। अवलोकन के पश्चात उनकी जिज्ञासाओं को स्वयंसेवी संस्थाओं के समन्वयकों एवं जोन कार्यक्रम समन्वयकों द्वारा संतुष्ट किया गया।

प्रशिक्षण के दौरान लगभग 20 दिन तक सभी प्रशिक्षणार्थियों को दो-दो के समूह में उनके लिए निर्धारित बस्तियों में सर्वे के लिए भेजा जाता है, जिसमें उन्हें बस्ती का बाहरी व दूसरे

चरण में आतंरिक सर्वे करना होता है। इस दौरान सभी को बस्तियों के नक्शे (बाहरी व आंतरिक) बनाने होते हैं। इस कार्य ने प्रशिक्षणार्थियों की उनके स्वयं के कार्य क्षेत्र में झिझक समाप्त करने व पहचान बनाने में सहायता प्रदान की। साथ ही बस्ती के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक पृष्ठभूमि की जानकारी प्राप्त करता है, उसे किन परिस्थितियों में काम करना होगा इसका पूर्व में ही परिचय हो जाता है। समुदाय सहयोग किस स्तर का मिल सकेगा, इसका अहसास उसे पहले ही होने लगता हैं। परिवेश की जानकारी भी उन्हें पूर्व से ही हो जाती है।

इस प्रकार इस चरण में प्रशिक्षणार्थी अपने कार्य-क्षेत्र में व्यक्तिगत रूप से जाकर परिवारों के सर्वे का कार्य करते है, जिसका उद्देश्य लोगों में शाला खोलने व उसके उद्देश्यों को स्पष्ट करना, साथ ही उसमें स्वयं व संस्था की भूमिका को समझना आदि शामिल है, जिसमें वे काफी हद तक सफल भी रहे हैं।

आखिरी 2 सप्ताहों में भाषा व गणित पर शैक्षिक कौशलों को विकसित करने एवं इनसे संबंधित अवधारणाओं पर तार्किक चर्चाओं द्वारा समझ बनाने पर अधिक बल दिया जाता है। साथ ही अंतिम सप्ताह के आखिरी दिनों में प्रशिक्षण समाप्ति के पश्चात प्रथम 15 दिन शाला में बच्चों के साथ कार्य करने के लिए आगामी कार्य योजना बनाई जाती है, जो प्रशिक्षणार्थी स्वयं तैयार करते हैं।

इन प्रशिक्षणों की महत्ता का अंदाजा प्रशिक्षणार्थी, जो अब अध्यापक बन चुके है, के इन उद्‌गारों से लगाया जा सकता है-

''इससे स्पष्ट है कि इस प्रशिक्षण ने प्रशिक्षणार्थियों को न केवल शिक्षा, शिक्षक, शिक्षार्थी व शिक्षण को एक नये नजरिये से देखने व समझने का मौका दिया। बल्कि धैर्य, विनम्रता, सहनशीलता, प्रेम, आदि गुणों को उभारा, जिससे उन्हें कच्ची बस्ती जैसी जगह, जहां पर गरीबी, अशिक्षा, बीमारी, गंदगी, जगह की कमी, आपसी फूट, गंदी राजनीति व अविश्वास जैसी चुनौतिपूर्ण स्थितियों में न केवल संघर्ष करने का बल्कि सफलतापूर्वक अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सतत प्रयत्नशील रहने का बल भी मिला।''

प्रत्येक 15 दिन में होने वाली पाक्षिक कार्यशालाएं अध्यापकों को समय-समय पर संबलन ही नहीं बल्कि अपने-अपने कार्यक्षेत्र में आने वाली समस्याओं को एक-दूसरे से बांटने व उसका मिलकर समाधान करने का मंच भी साबित हो रही है।

इस प्रकार प्रशिक्षण का सिलसिला चलता रहा और अब तक प्रथम स्तर के 5 एवं द्वितीय स्तर के 6 प्रशिक्षण आयोजित किये जा चुके हैं।

सामुदायिक सहभागिता

सामुदायिक जनशाला कार्यक्रम की क्रियान्विति का आधार सामुदायिक सहभागिता हैं। हर स्तर पर समुदाय की भागीदारी को बनाना है। जनशालाओं के आरंभ होने से पूर्व प्रत्येक बस्ती में लगभग एक सप्ताह की अवधि में संस्था द्वारा नियुक्त शिक्षकों द्वारा सामुदायिक सर्वेक्षण का कार्य किया गया। इस दौरान बच्चों के लिए प्राथमिक शिक्षा और जनशालाओं में समुदाय की भागीदारी पर विस्तृत चर्चा की गई और समुदाय की प्रतिक्रिया मालूम की गई।

सभी बस्तियों में सामुदायिक नेताओं ने स्वयंसेवी संस्था के कार्यकर्ताओं को पूर्ण सहयोग दिया। शिक्षकों ने घर-घर जाकर प्रत्येक परिवार में इस कार्यक्रम की जानकारी दी। कार्यकर्ताओं के प्रयासों से समुदाय का विशेष सहयोग हर स्तर पर मिला। जनशाला स्थल भी संस्था व समुदाय ने संयुक्त प्रयास करके निर्धारित किया। समुदाय की राय को अहमियत देने पर उत्साहजनक परिणाम सामने आये। अधिकांश लोग अब स्वयं आगे आकर महत्वपूर्ण सलाह देते हैं। जनशालाओं के संचालन में आने वाली समस्याओं को समुदाय के प्रयासों से दूर किया

जा रहा है। यहां तक की संस्था कार्यकर्ताओं की अनुपस्थिति में भी अब समुदाय के लोग जनशालाओं के बेहतर संचालन तथा बच्चों की प्रगति के बारे में सामूहिक चर्चा करते हैं।

अधिकांश परिवारों के पुरुष व महिलाएं अपनी व्यक्तिगत समस्याओं और पारिवारिक निर्णयों में भी संस्था कार्यकर्त्ताओं को सहभागी बनाने लगे हैं। संस्था कार्यकर्त्ता अधिकांश परिवारों से आत्मीयता से जुड़ने लगे हैं। आत्मीय संबंधों के आधार पर सामुदायिक सहभागिता, कार्यक्रम की सफलता के लिए शुभ संकेत ही माना जाना चाहिए। कार्यक्रम का प्रयास है कि महिलाएं प्रमुख रूप से जनशालाओं की गतिविधियों से जुड़ें क्योंकि वे ही अधिकांश समय बच्चों के साथ रहती हैं और उनके विकास में सहयोगी साबित हो सकती हैं।

सामुदायिक स्तर पर अन्य प्रयास

जनशालाओं में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाएं शैक्षणिक गतिविधियों के अतिरिक्त समय में नियमित रूप से समुदाय से संपर्क करते हैं। जनशाला की गतिविधियों व बच्चों की प्रगति के अलावा समुदाय के साथ अन्य विषयों पर भी चर्चा करते हैं ताकि सामुदायिक भागीदारी को बल मिले। अभिभावकों व समुदाय से निकटता बढ़े। सभी विषयों पर चर्चा से शिक्षक व शिक्षिकाएं बस्तीवासियों के पारिवारिक सदस्य जैसे हो गये हैं। संस्था कार्यकर्ताओं द्वारा निम्न विषयों पर चर्चा करके और सलाह देकर सामुदायिक जागरूकता का भी दायित्व निभाया जा रहा है:-

- स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण
- महिला सशक्तीकरण
- व्यक्तिगत स्वच्छता व सफाई
- नशामुक्ति
- स्वयं सहायता समूहों के आधार पर महिला विकास की संभावनाएं
- खाली समय में साक्षरता
- व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त कर कुटीर उद्योग प्रारंभ करने से अतिरिक्त आय अर्जन
- पर्यावरण सुरक्षा
- बाल स्वास्थ्य

उक्त विषयों पर चर्चा एवं विचार विमर्श से सामुदायिक स्तर पर भी जागरूकता की स्थिति उत्पन्न होने लगी है। यदि अभिभावक जागरूक होंगे तो वे बच्चों की शिक्षा और उनके भविष्य के प्रति एक सकारात्मक सोच बना सकेंगे। बच्चों को प्राथमिक शिक्षा के साथ-साथ सामुदायिक स्तर पर जागरूकता जनशाला कार्यक्रम का अतिरिक्त प्रयास हैं।

बीच-बीच में आने वाली चुनौतियां

प्रारम्भिक तीन माह में बच्चों की संख्या नियमित रही परन्तु जून के पश्चात बच्चों की संख्या में कुछ स्थानों पर कमी हुई, जिसके मुख्य कारण निम्न हैं:-

- तीन माह में शिक्षा के प्रति जागरूकता एवं रूचि पैदा होने से बच्चों का शिक्षा की मुख्य धारा जैसे पास की सरकारी/प्राइवेट औपचारिक शिक्षण संस्थाओं से जुड़ना।
- शिक्षण सामग्री समय पर उपलब्ध न होना व बस्ती में पर्याप्त स्थान उपलब्ध न होना।
- समुदाय में आपसी विवाद होना।
- पाठ्यपुस्तकों रहित शिक्षा पद्धति पर समुदाय का विश्वास न होना।
- बाल शिक्षिका की नियुक्ति न होना।

इन स्थितियों को देखकर प्रत्येक स्तर पर प्रयास किये गये कि बच्चों में नियमितता बढ़े, जिनमें निम्न प्रयास मुख्य रहे:-

- प्रभात फेरियां निकाली गई।
- बस्ती में समुदाय को जोड़कर एवं शिक्षकों ने मिलकर नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किए।
- कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रम किए गए।
- जिस बस्ती में शाला न जाने वाले बच्चे कम ही रह गए थे उस बस्ती को पूर्ण सर्वे के पश्चात परिवर्तित किया गया।
- शालाओं के स्थान भी जरूरत के अनुसार परिवर्तित किए गए।
- यथा सम्भव समय पर शैक्षिक सामग्री दी गई।

संस्था स्तर पर शिक्षकों का मनोबल बढ़ाया गया। बार-बार अवलोकन कर शिक्षकों का सहयोग किया गया। समुदाय बैठकें की गई। इस प्रकार प्रयासरत रहने पर बहुत सफलता मिली एवं फिर से बच्चों की संख्या में वृद्धि हुई। निरन्तर प्रयत्न करने से निश्चित रूप से हमें सफलता प्राप्त होती है।

बस्ती सर्वे

शिक्षा के सार्वजनीकरण के उद्देश्य से माह जून 2000 में

बच्चों के साथ शिक्षा के कार्य को एक घंटा कम कर पूरी बस्ती का सर्वे किया गया, जिससे शिक्षा से वंचित अब कितने बच्चे हैं, यह पता लगाकर उन्हें शाला में आने के लिए प्रेरित किया जा सके। स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा चयन किए गए अधिकतर व्यक्तियों का पूरा सर्वे प्रारम्भ में ही हो गया था परन्तु यदि बस्ती बहुत बड़ी है तो 100 से 150 घरों तक सर्वे किया गया था। सर्वे के आधार पर बस्ती की योजना तैयार करने में काफी सुविधा रहती है। सर्वे रिपोर्ट के आधार पर बस्ती की भावी योजना तैयार की गई।

शैक्षिक स्तर

बच्चों के शैक्षिक स्तर कक्षानुसार वर्गीकृत नहीं किए गए है एवं न ही उन बच्चों को आयु के अनुसार वर्गीकृत किया गया है। परन्तु बच्चे शिक्षा में जिस स्तर पर पहुंचे हैं एवं उनकी आयु कितनी हैं दोनों ही दृष्टिकोण से उनके समूह बनाकर अध्यापन करवाया जा रहा है। प्रत्येक बस्ती की परिस्थिति, बच्चों की पूर्व में मिली शिक्षा सुविधा एवं शिक्षकों के प्रयास सभी को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक बस्ती में शैक्षिक गतिविधियों के स्तर भिन्न-भिन्न हैं। बच्चों की भाषा में पहले मौखिक एवं कुछ सरल परिचित शब्दों जैसे कप, नल, बस, आदि से वर्णों एवं मात्राओं का ज्ञान करवाया जाता है। गणित में कुछ ठोस वस्तुओं से अवधारणाओं (छोटा, बड़ा, लम्बा, ठिगना, मोटा, पतला, कम, ज्यादा) से प्रारम्भ कर 0 से 9 तक एवं जोड़, बाकी, गुणा, भाग, आदि करवाया जाता है। मई 2001 में सभी बच्चों के उपलब्धि स्तर का मूल्यांकन किया गया। मूल्यांकन प्रपत्र तैयार किये गये बच्चों की प्रगति रिपोर्ट सभी अभिभावकों के हाथों में उनको बुलाकर दी गई। बच्चों की प्रगति उनके चेहरे की चमक को बढ़ा रही थी। वे पहली बार अपने बच्चों के भविष्य के प्रति आश्वस्त नजर आने लगे थे।

बच्चों में परिवर्तन का मूल्यांकन

सामुदायिक जनशाला संचालन की प्रक्रिया तो नवम्बर 1999 से ही प्रारम्भ हो गई थी लेकिन प्रत्यक्ष रूप से बच्चों से परिसंवाद 1 फरवरी, 2000 से जनशालाओं की शुरूआत के साथ ही संभव हो पाया। प्रतिदिन की गतिविधियों में बच्चों में संतोषजनक परिवर्तन नजर आने लगा। एक आशा मन में जगने लगी। शिक्षक उन्हें रुचिकर प्राथमिक शिक्षा तो प्रदान कर ही रहे थे, उनके विकास से संबंधित अन्य पक्षों पर भी निम्नानुसार ध्यान केन्द्रित करने लगे:

- व्यक्तिगत स्वच्छता एवं सफाई के प्रति जागरूकता।
- बड़ों के प्रति सम्मान के भाव की प्रेरणा।
- अनुशासन की आदत डालना।
- व्यक्तित्व विकास के लिए व्यावहारिक ज्ञान उपलब्ध कराना।
- मनोरंजन और खेल के अवसर उपलब्ध कराना।

उक्त प्रयासों की प्रतिक्रिया स्वरूप पाया गया कि:

- अधिकांश बच्चे स्वच्छ रहने लगे हैं। नियमित नहाने-धोने के अलावा अपनी शाला, घरों व बस्ती की सफाई के लिए अपना दृष्टिकोण भी जाहिर करने लगे हैं। धुले कपड़े पहनने लगे हैं। नियमित नाखून और बाल काटते हैं।
- समस्त बच्चे बड़ों का आदर करने लगे है। कुछ बच्चे तो नियमित प्रातः उठने पर अभिभावकों का अभिवादन करते हैं। जनशाला में आकर शिक्षक का अभिवादन करके आशीर्वाद लेते हैं।
- समयबद्धता की ओर ध्यान देने लगे हैं।
- बच्चों का सामान्य ज्ञान बढ़ा है।
- स्वस्थ मनोरंजन और खेलों पर ध्यान देते हैं जबकि पूर्व में अधिकांश बच्चे इधर-उधर घूमते रहते थे।

अन्य गतिविधियां

बच्चों के साथ की जाने वाली प्रत्येक गतिविधियां शैक्षिक ही होती है परन्तु भाषा, गणित, पर्यावरण के अतिरिक्त भी बच्चों के मानसिक एवं शारीरिक विकास हेतु कई तरह की गतिविधियां करवाई जाती है।

व्यायाम

प्रत्येक बस्ती में व्यायाम करवाया जाता है। किसी बस्ती में गीत के साथ तो किसी में खेल के साथ तो किसी बस्ती में गिनती के साथ। एक दो बस्तियों में यदि शिक्षक किसी कारण से थोड़ी देर से भी जाता हैं तो बच्चे स्वतः ही व्यायाम करना प्रारम्भ कर देते हैं। ऐसी आदतों को देखकर लगता है बच्चों में स्व-अनुशासन की भावना आ रही है।

खेल एवं गीत

बच्चों को कई प्रकार के खेल करवाये जाते हैं एवं उनके उद्देश्यों पर चर्चा की जाती है। जैसे मतीरा तौड़ (गिनती, जोड़, बाकी, मनोरंजन), काना-फूसी करना (अपनी बात को

किस प्रकार संप्रेषित करना) वालीबॉल, रिंग बाल, रस्सी कूदना, दौड़ आदि शारीरिक खेल खिलाए जाते है।

खेलने के लिए कुछ बस्तियों में जगह नहीं होने से समस्या आती है। बच्चों को बालगीत भी करवाये जाते हैं। प्रारम्भ में शिक्षक उन्हें बालगीत करवाते थे। अब स्थिति यह है कि बच्चे शाला में किसी के भी जाने पर बालगीत सुनाने के लिए लालायित रहते है। परन्तु अब समय पर ही बालगीत एवं खेल में रूचि लेते हैं क्योंकि खेल व गीत से अब वे नियमित रूप आने है एवं वे पढ़ाई की महत्ता को समझने लगे हैं।

रचनात्मक गतिविधियां

बच्चों ने रचनात्मक गतिविधियों के अन्तर्गत थर्माकोल की वस्तुएं, पोटीन मिट्टी से अपनी कल्पना के अनुसार आकृतियां, चित्र, छोटी-छोटी डंडियों से खाट, चश्मा, आदि बनाए। रंगीन कागजों से मोड़कर एवं काटकर कलात्मक वस्तुएं बनाना। बच्चों को इस प्रकार के कार्य करवाने से उनमें कल्पनाशीलता एवं रचनात्मकता का विकास होता है।

पर्यावरण अध्ययन

बच्चों को आसपास के परिवेश से अवगत कराने के उद्देश्य से उन्हें सरल विषयों के बारे में जानकारी दी जाती हैं जैसे रंगों, फलों, खाद्य पदार्थों, कपड़ों, स्वयं से परिवार तक, आदि से अवगत कराना इसी प्रकार जानवरों, शरीर के बाह्य अंगों, आदि पर चर्चा की जाती है। बच्चों के स्तरानुसार पर्यावरण पर चर्चा की जाती है एवं ठोस वस्तुओं एवं प्रायोगिक तरीके से सिखाने, का प्रयास किया जाता है।

बच्चों की शारीरिक स्वच्छता व शाला स्थान की स्वच्छता में अब बच्चों के साथ चर्चा कम करनी पड़ती है। वे स्वयं इसके प्रति अब सचेत है। शाला में अब अधिकतर बच्चे स्वच्छता से आते हैं। स्वच्छता की जानकारी प्रायोगिक करके बताई जाती है, साबुन से हाथ धुलवाए जाते हैं, कंघे से बाल बनवाए जाते हैं, नाखून कटवाए जाते हैं। बच्चे घर जाकर अपने माता-पिता को भी समझाते हैं कि डंडी वाले लोटे से पानी निकालना चाहिए।

शिक्षक संबलन

शिक्षकों के संबलन हेतु प्रतिमाह संस्था में एक बैठक रखी जाती है। बैठक में शिक्षकों की प्रगति, अनुभवों का आदान-प्रदान समस्याओं एवं उनके निराकरण के प्रयास किए जाते है एवं टीम भावना जागृत होती है। किसी भी समस्या में शिक्षक एक दूसरे की मदद करने को तैयार रहते है। सीखने-सिखाने की विधा को बच्चों के अनुरूप प्रतिदिन योजना डायरी में समायोजित कर अगले दिन योजना बनाई जाती है।

(अ) शाला अवलोकन

समय-समय पर शाला-अवलोकन समन्वयक द्वारा किया जाता है, साथ ही संस्था के वरिष्ठ सदस्यों द्वारा भी शाला-अवलोकन कर शिक्षकों का मनोबल बढ़ाया जाता है। नियमित शाला-अवलोकन में मुख्य रूप से समुदाय से चर्चा, बच्चों के साथ गतिविधियां शिक्षकों की कार्य प्रणाली देखकर उन्हें सुझावात्मक मार्गदर्शन देना। समस्याओं का मिलकर हल खोजने का प्रयास करना। बोध शिक्षा समिति, जोन कार्यक्रम समन्वयक एवं जनशाला के मुख्यालय के अधिकारियों के द्वारा भी इन सामुदायिक जनशालाओं का नियमित अवलोकन किया जाता है जिसके दौरान शैक्षिक एवं अन्य प्रकार की समस्याओं के निराकरण के प्रयास किये जाते रहे हैं। इसी कारण यह सामूहिक उत्तरदायित्व का कार्यक्रम समझा जाता है।

(ब) कार्यशालाएं

शिक्षकों की प्रत्येक 15 दिन में एक बार बोध शिक्षण संस्था में एक कार्यशाला होती है। कार्यशाला में शैक्षिक समस्याओं पर चर्चा की जाती है एवं आगामी 15 दिन की योजना तैयार की जाती है। कार्यशाला में शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे एक-एक बालगीत, कविता, वर्कशीट, रचनात्मक गतिविधियां साथ में ले कर आये।

इस प्रकार शिक्षक स्वयं सोचकर गतिविधियां निकालने के लिए पहल करने की ओर अग्रसर होते है। संस्था समन्वयक द्वारा भी मौसम के अनुसार बालगीत सिखाया जाता है, जैसे -

बादल के घोड़े पर चढ़कर आई बरखा रानी,
छम छम, छम, छम।

एवं अलग-अलग आकृतियां (त्रिभुज, आयत, चौकोर एवं गोल) से मोर बनाना सिखाया जाता है। इस प्रकार से शिक्षकों में भी पहल लेने की आदत बनती है।

समुदाय बैठक

समुदाय में समय-समय पर बैठकें की जाती है। विशेषकर महिलाओं की बैठकें भी की जाती है। बैठक में बच्चों की

प्रगति, समस्या एवं सुझावों पर तो चर्चा होती ही है, साथ ही महिला स्वास्थ्य एवं बच्चों की सफाई, महिला एवं बालिकाओं की शिक्षा पर अधिक चर्चा की जाती है।

महिला एवं किशोरी समूह

बस्तियों में किशोरी समूह के साथ भी कार्य किया जा रहा है। उनकी सतत् शिक्षा, स्वास्थ्य, उनके अधिकारों एवं आत्मरक्षा के उपायों तथा जीवन कौशल संबंधी जानकारियां दी जा रही है।

कुछ बस्तियों में 18 वर्ष से अधिक आयु वर्ग की महिलाओं के लिए सिलाई केन्द्र भी चलाया जा रहा है।

अनुभव

समुदाय के साथ

सामुदायिक जनशालाओं में कार्य करने के दौरान कई तरह के अनुभवों से गुजरना पड़ा है, जिनमें से कुछ निम्न प्रकार हैः-

प्रारम्भ में समुदाय के लोगों का कार्यक्रम के प्रति विश्वास नहीं था। उनकी धारणा थी कि अन्य कार्यक्रमों की तरह यह कार्यक्रम भी नियमित रूप से नहीं चलेगा। अभिभावकों के मन में प्रश्न थे, यह शाला स्थाई होगी या अस्थाई। परन्तु समुदाय में धीरे-धीरे कार्यक्रम के प्रति एक विश्वास की भावना जागृत हुई। आज वे कार्यक्रम को अपना मानने लगे हैं।

कुछ माता-पिता अभी भी निर्लिप्त है कि बच्चा नियमित स्कूल जा रहा है या नहीं, या क्या सीख रहा है? कुछ अभिभावकों की अभी भी प्रतिक्रिया रहती है, यह कैसा स्कूल है जहां बच्चों को डराया, धमकाया या मारा नहीं जाता हैं। अभिभावक कहते हैं *"बस्ती के बच्चे ऐसे नहीं सुधरेंगे आप तो इन्हें मारा करो।"* आप न तो किताबें देते हो सिर्फ गीत, खेल करवाते हो, इससे क्या सीखेंगे?

परन्तु लगातार अभिभावकों से सम्पर्क एवं संवाद करने पर एवं बच्चों की शैक्षिक उन्नति एवं बच्चों में सकारात्मक परिवर्तन देखकर उन्हें यह विश्वास हो गया कि बच्चों को इस प्रकार से प्यार से भी सिखाया जा सकता है।

कुछ बस्तियों में समुदाय के सहयोग एवं संस्थाओं द्वारा किए गए प्रयासों से सामुदायिक केन्द्र उपलब्ध हुए हैं। समुदाय के लोग जनशाला से एवं शिक्षक से इतने संतुष्ट हैं कि वे स्थान की कमी के कारण स्थान भी उपलब्ध करवा रहे हैं। शिक्षक या संस्था द्वारा बस्ती परिवर्तन की बात कहने पर भी नाराज होते हैं एवं स्थान उपलब्ध करवाने का आश्वासन देते हैं।

समुदाय संपर्क से बस्तियों में इतना बदलाव आया है कि जहां प्रारम्भिक अवस्था के दौरान बस्तियों में शुरू में लोग बात नहीं करते थे, तथा जाने वाले व्यक्तियों को शक की निगाह से देखते थे, गाली-गलौच, चोर-उच्चका तक कहते थे, वही जैसे-जैसे समय बीता, बस्ती समुदाय के लोगों का जनशाला तथा जनशाला से संबंधित अधिकारियों व शिक्षकों के प्रति विश्वास बढ़ता चला गया, शुरू में समुदाय के लोग जनशाला को अन्य कार्यक्रमों की भांति थोड़े समय चलने वाला कार्यक्रम मानते थे। अब समुदाय की राय बदल गई है। समुदाय के लोगों का कहना है, आप सबकी मेहनत से ऐसा हुआ, बच्चों को बड़ी मेहनत से पढ़ाते हो, बच्चे अच्छे संस्कार सीख रहे हैं। संस्था व शिक्षकों के सहयोग से बच्चे कुछ कर लेंगे वरना ये बच्चे बेकार घूमते थे। अब किसी भी कार्यक्रम के बारे में बात करने से वे खुश होते हैं। कई बस्तियों के बुजुर्ग, प्रतिष्ठित व्यक्ति तो बड़े-बड़े व्यक्तियों, महिलाओं तथा बड़ी लड़कियों के लिये भी कुछ करने को कहते हैं, कुछ का कहना है कि कुछ इस प्रकार के कार्यक्रम चलाये जायें, जिनमें हम काम धन्धा सीख सकें तथा रोजी-रोटी कमा सकें।

हार नहीं मानी

यज्ञशाला बावड़ी (हरिजन) बस्ती में कोई ऐसी जगह नहीं है जहां शाला का संचालन किया जा सके। एक सार्वजनिक जगह थी, वहां कुछ लोग बच्चों को ट्यूशन के बहाने पढ़ा रहे थे, किंतु उनका इतना वर्चस्व था कि हमें वे कोई स्थान देने को राजी नहीं थे, समुदाय ने भी मना कर दिया। किन्तु हमने समुदाय से निरन्तर सम्पर्क करके बच्चों की शिक्षा की उपादेयता को बताया तथा हमारे कार्यक्रम को समझाया तो कुछ लोगों ने हमारा साथ दिया तथा धीरे-धीरे एक खुली हुई सार्वजनिक जगह के लिये एक बैठक में रजामंदी दे दी गयी। फिर हमने यहां कार्य शुरू किया, इस बस्ती में भी धूलकोट बस्ती (एक अन्य बस्ती जहां भी यह समस्या थी) की छाया थी। शराब पीना आदि सभी आदतें पुरुषों में थी, परन्तु यहां बच्चे ठीक थे एवं नियमित शाला आ रहे थे।

यहां समुदाय से नियमित जुड़ाव रखकर इस खुले स्थान पर टीन शेड लगाने हेतु प्रयास किया गया और अन्त में टीन शेड बनकर पूरा हो गया, अब शाला का अपना स्वतंत्र भवन बन गया, जिससे हमें अपना कार्य पूरी क्षमता से करने में मदद मिल रही है।

समुदाय का विश्वास

अध्यापक के ये उदगार उपलब्धियों को प्रभावित करने से सहायक होंगे, जिससे उसने कहा है कि संस्था द्वारा उपलब्ध दवाईयों का वितरण मेरे द्वारा बस्ती व बड़ों की मरहम पट्टी भी की जाती है। उस समय मेरे मन में जो भाव उठते हैं, उसका मैं वर्णन नहीं कर सकता अपितु इतना अवश्य है कि दूसरों को दुखी देखकर मेरा मन भी दुखी हो जाता है और यदि मैं इस काबिल हूं कि दूसरों की मदद कर सकूं तो इससे अधिक खुशी की बात क्या हो सकती है कि जब संपर्क के दौरान लोग मुझे मास्टर साहब के साथ डॉक्टर भी कहते हैं। कभी मजबूरी में सीखा गया कार्य आज मेरे कार्य में कितना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रहा है तथा समय के साथ-साथ संबंधों में मधुरता व विश्वसनीयता लाने के लिये प्रयासरत हैं।

कितना समय लगता है

बारा मोरी बस्ती में भी कोई जगह न होने के कारण श्री बाबू खॉ के मकान में कमरा लेकर कार्य शुरू किया किन्तु किसी के घर में शाला चलाने में बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है, इन समस्याओं के होते हुए हम अपने कार्य में निखार नहीं ला सकते। इसे देखते हुए समुदाय की मीटिंग में हमारी समस्या रखी तो अध्यक्ष जी ने एक का मकान खाली देखकर उसे पूर्णतः शाला हेतु दे दिया जो पूर्णतः शाला के लिए स्थायी हैं।

वर्तमान में समुदाय वाले शाला की सफलता को देखते हुए कोई मकान पूर्णतः शाला हेतु खरीदना चाह रहे हैं। जिससे शाला का संचालन कराने की व्यवस्था हो। देखो कितना समय लगेगा।

समुदाय का जुड़ाव

छीपीवाड़ा बस्ती में कोली समुदाय है। यहां शिक्षा से वंचित बच्चे अधिक होने के कारण शाला खोली। समुदाय का बिखराव होने के कारण एक साथ नहीं बैठ पाते। काफी प्रयास के बावजूद भी 6 माह तक हमें उन्हें जोड़ने में सफलता नहीं मिली। शाला स्थान के नाम पर उन्होंने एक सार्वजनिक स्थान पर एक बरामदा दे दिया और सोचा हमारा काम निपटा। हमने उनका पीछा नहीं छोडा और उनसे लगातार सम्पर्क में आते रहे, उनके जन्म-मरण एवं परण में मिलते रहते और हमारी उपस्थिति का अहसास कराते रहे। इसे देखते हुए वे एक साथ मीटिंग में आने लगे।

समुदाय ने मीटिंग शुरू कर दी और पूर्व की कमेटी को जीवन्त करके फिर एक जुटता से कार्य करने का संकल्प लिया तथा अपनी कमेटी में शाला की अध्यापिका सीमा शेखावत तथा समन्वयक नेमीचन्द शर्मा को भी सदस्य बनाया। बच्चों की संख्या को देखते हुए सभी ने एक अलग बड़ा कमरा बना दिया तथा और भी एक कमरा साथ ही चार दीवारी बनाने की योजना बना रहे हैं। यह शाला आने वाले समय में द्वि-अध्यापकीय शाला का रूप लेगी। इस समय समुदाय का बहुत अच्छा जुड़ाव हो रहा हैं। यहां की विद्यालय विकास समिति एवं बस्ती विकास समिति में महिलाएं भी बहुत

जागरूक है। वे भी बैठक में भाग ले रही हैं, अपने विचार रखती हैं। बालिकाओं को पढ़ाने के लिये दृढ़ संकल्प है।

दिलों में स्थान बनने लगा

पर्वतपुरी बस्ती में भी शुरू में समुदाय का वही रवैया था जिस प्रकार छीपीवाडा बस्ती का। शाला स्थान हेतु एक खुला मंदिर ही बताया गया, यहां बैठने की उचित व्यवस्था नहीं थी। हम जब भी समुदाय के पास जाते तो सिर दर्द सा लगता था उन्हें। किंतु धीरे-धीरे उनके दिलों में स्थान बनाया एवं उन्हें जोड़ने हेतु 12 मीटिंगों की आहुति देकर इन्हें साथ ले पाये, 13 वीं मीटिंग में कहीं जाकर सफलता हाथ लगी और समुदाय के एक व्यक्ति ने पूरे मंदिर पर RCC डालकर एक हॉल बना दिया तथा बाकी समुदाय वालों ने एक छोटा कमरा बना दिया। अब यह पूर्णतः शाला के लिये उपलब्ध है स्थायी एवं स्वतंत्र है। पीछे बीते दिनों को झांक कर देखने पर ऐसा लगता है कि जो प्रारम्भ में असम्भव लगता था वह धैर्य के साथ काम करने एवं समुदाय का विश्वास जीतने पर, उन्हीं के द्वारा कितनी आसानी से सम्भव हो सका।

दुकान ही खाली कर दी

तमिल बस्ती मुस्लिम बाहुल्य बस्ती है यहां प्रारम्भ में कोई ध्यान नहीं दे रहे थे। कहते थे आप जैसे पहले भी कार्यक्रम आये है अपने उद्देश्य पूरा करके चले जाते हैं। ठीक आप भी कागजी कार्यवाही करके चले जाओ। कुछ दिन तक यह पूछते रहे कि अब कितने दिन और चलेगी आप की शाला, जिनके द्वारा पूर्व में इस तरह के कार्यक्रम चलाये गये थे उनकी करनी पर शर्म भी आती थी, पर मन में यह भी निश्चय दृढ़ होने लग रहा था कि हमें यहां डटकर काम करना होगा।

उठा-पटक के बाद स्थाई निर्माण . . .

नई माता का मंदिर सामुदायिक जनशाला के भवन की एक लम्बी जुझारू दास्तान है। समुदाय के दृढ़ निश्चय के आगे शाला भवन को तोड़ने वालों को अन्त में हार माननी पड़ी। यह है यहां घटी घटनाओं का क्रम:-

- **सामुदायिक जनशाला शैक्षिक विकास कमेटी का गठन**
- **9.8.2000 कमरे की नींव।**
- **28.10.2000 तक चार दीवारी का निर्माण।**
- **31.10.2000 को पड़ौसी लल्लू लाल महाजन एवं उसके आदमियों द्वारा दीवार को धराशायी करना एवं समुदाय द्वारा उनसे 1100 रूपये जुर्माना प्राप्त करना।**
- **5.11.2000 को पटवारी रतन सिंह द्वारा शाला भवन निर्माण के लिये काम आ रही सामग्री उठा ले जाना।**
- **6.11.2000 को समुदाय द्वारा तहसील स्तर से सामान पुन: प्राप्ति एवं भवन निर्माण की स्वीकृति के लिये अग्रिम कार्यवाही की जानकारी तहसीलदार द्वारा दिया जाना।**
- **8.11.2000 को जिलाधीश को इस स्थान पर शाला कक्ष निर्माण की अनुमति हेतु आवेदन-पत्र।**
- **2.12.2000 को जयपुर विकास प्राधिकरण को पत्र प्रेषित।**
- **पुन: निर्माण कार्य शुरू।**
- **13.12.2000 तक पट्टी सहित निर्माण।**
- **14.12.2000 को पुन: धराशायी।**
- **समुदाय द्वारा 6100/-रूपये का जुर्माना तोडने वालों को समुदाय द्वारा शारीरिक दण्ड।**
- **थाने द्वारा विवादित भूमि की पैमाइश।**
- **21.1.01 से 24.1.01 तक कक्षा कक्ष निर्माण प्रक्रिया पूरी।**
- **26.1.01 को स्थानीय एम.एल.ए. श्री सहदेव शर्मा द्वारा उद्घाटन।**
- **26.1.01 को स्टे।**
- **27.1.01 को खारिज।**

अब नई माता की सामुदायिक जनशाला वहां नियमित संचालित हो रही है।

खैर धीरे-धीरे वे लोग यह समझने लगे कि यह तो सचमुच ही अन्य योजनाओं से भिन्न है तो उन्होंने दिलचस्पी लेना शुरू कर दिया। बच्चों की संख्या में वृद्धि को देखते हुए उन्होंने अपने समुदाय की शाला में लगती हुई तीन दुकाने थी जिन्हें 500/-रू. प्रतिमाह किराये पर दे रखी थी उन्हें तुरन्त खाली कराके एवं उन्हें एक-एक करके शाला को उपलब्ध करा दी। यहां बच्चों की संख्या को देखते हुये तीन शिक्षकों की व्यवस्था कर दी गई है। यहॉ वर्तमान में समुदाय का पूर्ण योगदान है।

स्थान बदलना ही पड़ा

ब्रजराज गुर्जर बस्ती में शाला आरम्भ की थी किंतु यहां समुदाय का बिल्कुल भी सहयोग न मिल पाने से एवं न ही कोई शाला का स्थान मिलने के कारण हम इस बस्ती में किसी भी क्षेत्र में कामयाब नहीं हो पा रहे थे। बच्चों को एक मकान में लेकर शाला चला रहे थे। कहीं यह उम्मीद थी कि अन्य जगह की भांति एक दिन समुदाय का सहयोग मिलेगा। किंतु हमें यहां सहयोग के स्थान पर मिले धमकी भरे पत्र। हम इनसे विचलित हुए बिना कार्य करते रहे किंतु यहां समुदाय का सहयोग न मिलने से हमारे कार्य में निखार नहीं ला पा रहे थे। हमारी टीम ने इस बारे में विचार किया तो यह निष्कर्ष निकाला कि इस कार्यक्षमता का कहीं और उपयोग किया जाये तो परिणाम श्रेष्ठ मिल सकेंगें।

यही सोचकर यहां कार्यरत श्रीमती विनीता सक्सैना ने हिम्मत न हारते हुये अपनी मेहनत एवं कार्य लगन एवं रूचि के साथ फकीरों की डूंगरी का चयन किया। यहां भी काफी बच्चे शिक्षा से वंचित थे। समुदाय ने तुरन्त शाला का स्थायी स्थान भी दो कमरों वाला उपलब्ध करा दिया एवं शाला व्यवस्था में अब भी पूर्णतः भागीदारी निभा रहे हैं। यहां बच्चों की संख्या में निरन्तर वृद्धि को देखते हुए तीन अध्यापकों की शाला विकसित की जा सकेगी।

सफल प्रयोग

बैरवा बस्ती मालवीय नगर बाईपास से जगतपुरा की तरफ जाने वाली सड़क पर लगभग 150 मीटर जाकर मालवीय नगर तिराहे से बाई तरफ जाती सड़क से दाईं तरफ स्थित हैं। बस्ती में परिवारों की संख्या लगभग 400 तथा जनसंख्या लगभग 3,000 हैं। यहां बैरवा, बंगाली, बिहारी, मुस्लमान, बांग्लादेशी विभिन्न जातियों के लोग मिल-जुल कर रहते हैं किन्तु सर्वाधिक परिवार बैरवा समुदाय के हैं। ज्यादातर लोग मजदूरी और बेलदारी का कार्य करते हैं।

प्रारम्भिक दौर में शाला के स्थायित्व को बस्ती समुदाय द्वारा काफी प्रश्न किये गये। लगातार विश्वास दिलाने के बाद भी उनकी यही मानसिक सोच थी कि इनका क्या भरोसा "कब बोरिया, बिस्तर बांध कर चल दें" शिक्षक के नियमित संपर्क व शाला आने वाले बच्चों की आदतों में आये सकारात्मक परिवर्तनों से समुदाय की सोच बदल गई हैं। अब वे इस सामुदायिक जनशाला को सरकारी और निजी स्कूलों की तरह नियमित स्कूल मानने लगे हैं। समुदाय के सहयोग से मन्दिर एवं उसके आगे का पूरा खुला स्थान बच्चों के लिये उपलब्ध हो सका है।

बच्चा बना अनुवादक...

बंगाली और बिहारी समुदाय के बच्चे जब शुरू-शुरू में शाला आये तो हिन्दी भाषा नहीं समझते थे। एक बच्चा अमर जो हिन्दी जानता था वह शिक्षक की कही हुई बात को दूसरे बच्चों को उनकी भाषा में समझाता था। 6 महीने बाद अब बच्चे हिन्दी समझने लगे हैं।

8 वर्ष का सत्यनारायण गुमसुम और अपने-आप में खोया रहता था। अध्यापक ने बच्चे से बार-बार बात की और उस पर विशेष ध्यान दिया। अध्यापक ने देखा कि बच्चे में कुछ हीन भावना थी क्योंकि यह बच्चा बैठे-बैठे कपड़े गीले कर लेता था। सब बच्चे इसे देखकर हंसते थे। अध्यापक के प्यार और व्यवहार से आज यह नियमित और मुखर बालक बन गया है।

कृष्णा 6 वर्ष की बच्ची है। जन्म से ही उसकी आंख काफी फूली हुई है, जिससे वह स्कूल आने में संकोच करती थी। अध्यापक के आत्मीय व्यवहार से इसकी हीन भावना खत्म हो गई और यह नियमित शाला आने लगी।

सामुदायिक जनशाला पार्वती नगर, जयपुर में कार्यरत शिक्षक अशोक शर्मा ऐसे कितने ही उदाहरण देकर अपनी सफलताओं को बताते हैं।

प्यार मोहब्बत से दी जाती है तालीम

राजीव नगर कच्ची बस्ती, जयपुर की श्रीमती मुमताज बेगम कहती हैं कि आपकी ये शिक्षा देने की प्रक्रिया मुझे बहुत अच्छी लगती है, जिसमें आप बच्चों को प्यार मोहब्बत से तालीम देते हैं। सिखाने में जो खेल गतिविधियां आप अपनाते हैं, उससे बच्चा जल्दी समझ लेता है। मेरा बच्चा तो एक साल में पुस्तक पढ़ने लगा है। यदि यही तरीका सभी स्कूलों में हो जाये तो बच्चे निडर होकर मजे में सीख सकते हैं।

. . .और स्कूल चलने लगा

अम्बेड़कर नगर बस्ती आनासागर झील के उत्तरी-पश्चिमी किनारे पर अजमेर-पुष्कर रोड के मध्य में, घनी झाड़ियों के बीच में बसी हुई हैं। बस्ती में कुल 40 परिवार निवास करते हैं। वैशाली नगर की क्षेत्र की यह सबसे पिछड़ी हुई बस्ती है। बस्ती में हरिजन व भाट परिवार के लोग रहते हैं। बस्ती के अन्दर किसी भी तरह का विद्यालय नहीं हैं। आर्थिक दृष्टि से यहां के लोगों की स्थिति बहुत ही दयनीय हैं। पुरुष महिलाएं सभी मजदूरी करते हैं एवं कुछ लोग कठपुतली दिखाने का कार्य करते हैं। शैक्षिक स्थिति की दृष्टि मे सभी लोग निरक्षर हैं। समस्त सामाजिक-आर्थिक विसंगतियों के बावजूद बच्चे व महिलाएं पढ़ने को इच्छुक हैं।

इस बस्ती में कोई पक्का मकान नहीं है, केवल झोपड़ियां या टेंट हैं। सामुदायिक जनशाला प्रारम्भ करते समय स्थान की समस्या सबसे बड़ी थी। समुदाय आर्थिक रूप से इतना पिछड़ा हुआ है कि सहयेाग देने की बात तो दूर, बात भी नहीं करना चाहते थे। पढ़ने-लिखने के बारे में उनकी कोई सोच नहीं थी। संस्था से श्री ओमप्रकाश माथुर स्वयं इस बस्ती में बातचीत करते गये। जब कोई स्थान उपलब्ध न हुआ तो खुले स्थान पर ही शिक्षण कार्य प्रारम्भ कर दिया गया। शिक्षक की दृढ़ मानसिकता देखकर समुदाय में आंशिक बदलाव आया, जिसका परिणाम यह निकला की बस्ती में स्थित एकमात्र पक्का कमरा (जोकि पिछले 3 साल से बंद पड़ा था) विद्यालय के लिये खोल दिया गया। कमरे के बाहर बहुत गंदगी व कूड़े का ढेर था। एक कच्चा चबूतरा बना हुआ था। रोशनदान भी नहीं था। धीरे-धीरे समुदाय इकट्ठा होता गया। बच्चों और अभिभावकों ने मिलकर सारी जगह साफ-सुथरी कर दी। समुदाय के लोग कमरे में खिड़की बनाने की बातें करने लगे। शिक्षक की प्रेरणा से बस्ती के सभी बालक-बालिकाएं विद्यालय में आने लेगे और स्कूल चलने लग गया।

हथाई बनी स्कूल (शिक्षिका द्वारा श्रमदान की पहल)

पुष्कर घाटी के मार्ग पर रीजनल कॉलेज, अजमेर के सामने एक बिखरा हुआ क्षेत्र हैं, जिसे पहले केसरपुर के नाम से जाना जाता था, अब यह (बंजारा बस्ती) कोटड़ा के नाम से जाना जाता है। 100 वर्ष पुराने इस क्षेत्र में जाति अनुसार कई बस्तियां हैं, जिनमें से बंजारा बस्ती इन्हीं में से एक हैं। बस्ती में लगभग 100 परिवार हैं। स्त्री पुरुष दोनों मजदूरी करते हैं। आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुये हैं। अधिकतर पुरुष, महिलाएं व बच्चे निरक्षर हैं। कुछ छोटे बच्चे सरकारी स्कूल में पढ़ने जाते हैं परन्तु बालिकाएं प्रायः विद्यालय में नामांकित ही नहीं हुई अथवा हुई है तो कक्षा एक, दो के बाद विद्यालय छोड़ चुकी है। बच्चे पढ़ना चाहते हैं। लड़कियां पढ़ाई के साथ-साथ कुछ अन्य घरेलू कार्य भी सीखना चाहती हैं।

बस्ती में रहने वाले अधिकतर लोग शराब का सेवन करते हैं और बात-बात में लड़ाई झगड़ा करते रहते हैं। पहली बार बस्ती में जाने पर ऐसा लगा, ये लोग शिक्षा का काम नहीं करने देंगे। सबसे पहले छोटे-छोटे समूहों में समुदाय के साथ बातचीत की गई। जब कुछ लोग यह विश्वास करने लगे कि यह काम हमारे ही बच्चों के हित में हैं, बड़े समूहों में वातावरण निर्माण गतिविधियां एवं बैठक का आयोजन हुआ।

प्रथम बैठक 15 फरवरी 2001 को बस्ती में हथाई पर आयोजित की गई। केवल 12 सदस्य बैठक में उपस्थित हुये। जब अध्यापिका ने कार्यक्रम के बारे में बताया तो हथाई पर बने दो कमरों में सामुदायिक जनशाला खोलने का प्रस्ताव मंजूर कर लिया गया। हथाई भवन काफी समय से बंद पड़ा था।

8 मार्च 2001 को दूसरी बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में 15 सदस्य उपस्थित हुये। अध्यापिका ने भवन की पुताई, सफाई, फर्श की लिपाई आदि की बातचीत की। समुदाय के लोग बहुत समझाने-बुझाने के बाद फर्श की लिपाई के लिए गोबर एवं मिट्टी की व्यवस्था करने को तैयार हो गये।

शिक्षिका ने जिम्मेदारी ली की वह और कमला दीदी (अतिरिक्त शिक्षिका) स्वयं मिलकर फर्श की लिपाई-पुताई कर लेंगे। अध्यापिका को श्रमदान करते देखकर बच्चे, किशोर बालिकाओं व महिलाओं ने भी स्थान को साफ बनाने में मदद की। 5-6 दिन में कूड़ा-करकट हटकर स्थान साफ हो गया। इस प्रकार शिक्षिका द्वारा श्रमदान की पहल से प्रेरित होकर समुदाय सहयोग से हथाई स्कूल में रूपान्तरित हो गया।

शिक्षक की पहल से सक्रिय हुआ विद्यालय

रा.प्रा.वि. भोपजी का डेरा, जयपुर शहर में स्थित वह विद्यालय हैं जिसमें पिछले 5 वर्षों से 10-15 बच्चे ही नियमित रूप से उपस्थित होते थे। सत्र 1999-2000 में इस विद्यालय को अनार्थिक घोषित कर दिया गया। उसी समय यह विद्यालय जनशाला कार्यक्रम के अन्तर्गत चयनित हुआ। प्रथम प्रधानाध्यापक प्रशिक्षण ''संवाद हेतु पहल'' में इस विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री प्रकाश चन्द्र शर्मा ने भाग लिया। प्रधानाध्यापक शर्मा गीत, संगीत, चित्रकला आदि में विशेष योग्यता एवं रूचि रखते हैं। इस प्रशिक्षण कार्यशाला में उन्हें पहली बार अपनी योग्यताओं की उपयोगिता का अहसास हुआ। निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान द्वारा अनार्थिक स्कूलों को बंद करने के लिए आयोजित बैठक में प्रधानाध्यापक शर्मा ने विश्वास दिलाया कि वे इस विद्यालय को पुनः जीवित कर देंगे।

पिछले दो वर्ष से इस विद्यालय में बच्चों की संख्या न केवल बढ़ी है बल्कि नियमित उपस्थिति भी बढ़ी है। विद्यालय में अधिकांश बच्चे मुस्लिम समुदाय के है। अध्यापकों ने प्रतिदिन समुदाय से संपर्क किया। प्रत्येक बच्चे का ब्यौरा रखा गया। कक्षा-कक्ष शिक्षण को आकर्षक व रोचक बनाया है। उल्लेखनीय है कि सत्र पर्यन्त 40-50 बच्चे नियमित रूप से विद्यालय में आते थे किन्तु परीक्षा में 81 बच्चों ने भाग लिया। विद्यालय में कामकाजी बच्चे भी अध्ययनरत है। शिक्षकों द्वारा समय की शिथिलता के कारण ये काम के साथ-साथ पढ़ाई भी कर रहे हैं। जीर्ण-शीर्ण विद्यालय को शिक्षकों की संकल्पबद्धता ने बच्चों के बैठने लायक बना दिया है।

समुदाय का सहयोग नगण्य जैसा है। विद्यालय के अस्तित्व को बचाये रखने के लिए प्रधानाध्यापक शर्मा ने एक लम्बी लड़ाई लड़ी है। विद्यालय में नियमित बच्चों के अतिरिक्त किशोरी बालिका मंच का गठन किया गया, जिसमें वर्तमान में 22 सदस्य हैं। प्रत्येक रविवार को ये सब बालिकाएं विद्यालय में इकट्ठी होती है। विद्यालय के शिक्षक स्वयं एवं कभी-कभी कुछ विशेषज्ञों को लाकर इन्हें पेन्टिंग, कुकिंग एवं अनुपयोगी वस्तुओं से साज-सज्जा की चीजें बनाना सिखाते हैं। इस समूह से जुड़कर इन बालिकाओं में अद्‌भूत आत्मविश्वास आया है और वे स्वावलम्बन की ओर बढ़ी हैं।

विद्यालय मंदिर परिसर में चलता है। मंदिर में भजन के लिए आने वाली कुछ महिलाओं ने भी इन शिक्षकों से अक्षर सीखने की बात कही। परिणामस्वरूप 6 महिलाएं पढ़ना-लिखना सीख रहीं हैं। समुदाय के नकारात्मक रवैये एवं असहयोग के बावजूद विद्यालय का कुशल संचालन शिक्षक की पहल का एक अच्छा उदाहरण है।

आप क्यों परेशान होते हो...

''जब ये खुद ही अपने लिये कुछ नहीं करना चाहते तो आप क्यों परेशान होते हो।''

प्रारंभिक अवस्था में शिव कॉलोनी कच्ची बस्ती, जयपुर में सर्वे करने गये शिक्षक व संस्था समन्वयक से समुदाय के लोगों का यही कहना था।

इस बस्ती में दो तरह का समुदाय है। एक वे जो कहीं नौकरी आदि करते हैं, एक बिल्कुल निम्न वर्ग के। पूर्व में खुले स्थान में शाला संचालित की गई। समुदाय का विश्वास हासिल करते हुए आज यहां शाला के लिये 2 कमरों का निर्माण हो गया है। समुदाय की नजरों में संस्था व शिक्षक के प्रति न केवल विश्वास कायम हुआ है। बल्कि एक सम्मानीय स्थान भी प्राप्त हुआ है। रामचन्द्र कहते हैं, ''अब हमें लगने लगा है कि आपके प्रति हमारी पहले की सोच सही नहीं थी। यहॉ वह समुदाय शाला के भौतिक विकास में मदद देता है जिनके बच्चे निजी शालाओं में पढ़ते है, उन्होंने ही निर्माण कार्य में आर्थिक सहायता दी है।

शाला विकास समिति गठित है। महिलाओं का जुड़ाव बहुत अधिक है। पहले महिलाओं की सोच थी कि ''लड़कियां क्या पढ़ेंगी, इनका दिमाग तो घुटने में होता है।'' अब वही महिलाएं रैली आदि में उत्साह से भाग लेती है।

खण्डहर से विद्यालय तक...

जनशाला कार्यक्रम की प्रारम्भिक अवस्था में राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय परशुरामद्वारा अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण था। कार्यक्रम प्रारम्भ होने के बाद समुदाय से सम्पर्क बढ़ने लगा। विद्यालय में अभिभावकों से संवाद कायम हुआ। यहां के प्रधानाध्यापक जी के कुशल नेतृत्व में विद्यालय भवन में ढ़ाई लाख रूपये का निर्माण कार्य विधायक कोटे से हुआ है, इसके अतिरिक्त समुदाय के द्वारा देय आर्थिक सहयोग से भी भौतिक विकास हुआ है। विद्यालय में चारदीवारी, गेट, दो बड़े कमरे, मरम्मत, नल-बिजली का कनेक्शन आदि अनेकों कार्य हुये हैं। प्रधानाध्यापक जी की योजना विद्यालय परिसर में 100 वृक्ष लगाने की है। दिनांक 4.12.2001 को विधायक श्री नवल किशोर शर्मा द्वारा निर्मित भवन का लोकार्पण किया गया है।

प्रधानाध्यापक जी का कहना है कि प्रशिक्षण के पश्चात् शिक्षकों में एक अनूठा उत्साह आया है। संदर्भ व्यक्तियों एवं जोन कार्यक्रम समन्वयक के सतत् संबलन से विद्यालय में शैक्षिक गतिविधियां मजबूत हुई हैं। कक्षा 1 से 5 तक बाल गीतों एवं सहायक शिक्षण सामग्री के माध्यम से पढ़ाई-लिखाई होती है। पिछले वर्ष विद्यालय में कुल 407 बच्चे नामांकित थे किन्तु प्रारम्भिक कक्षाओं में औसत उपस्थिति 40 प्रतिशत के लगभग थी। इस वर्ष विद्यालय में 477 बच्चे नामांकित हैं, जिनमें 263 बालक एवं 214 बालिकाएं हैं। प्रारम्भिक कक्षाओं में औसत उपस्थिति 80-90 प्रतिशत रहती है।

पास में चल रहे ब्रिज कोर्स के शिक्षक भी प्रधानाध्यापक जी से लगातार सम्पर्क रखते हैं। संस्था प्रधान शिक्षकों के बीच अच्छे संबंधों से कार्य में गति एवं लय आ गई है।

"प्रधानाध्यापक जी का कहना है कि वे विद्यालय समय में प्रत्येक क्षण विद्यालय के विकास के बारे में सोचते हैं। 12.30 बजे के बाद विद्यालय की तरफ मुड़ कर भी नहीं देखते।"

मेरे स्कूल से जनशाला हटा दो...

परियोजना के प्रारम्भिक दौर में राजकीय विद्यालयों को राजकीय जनशाला में रूपांतरित करने के क्रम में राजकीय प्राथमिक विद्यालय हीरापुरा भी चयनित हुआ। यहॉ के संस्था प्रधान ने कार्यक्रम का बहुत विरोध किया। उन्हे लगता था कि उनके विद्यालय में बहुत कार्य बढ़ जायेगा। उन्होनें जिला शिक्षा अधिकारी को लिखकर दिया मेरे स्कूल से जनशाला हटा दो। प्रथम प्रशिक्षण एवं लगातार संवाद के बाद उनका दृष्टिकोण बिलकुल बदल गया। आज यह संस्था प्रधान दक्ष प्रशिक्षक के रूप में भी अपनी सेवाएं दे रहे है।

अब बनने लगा है स्कूल...

दुर्गापुरा क्षेत्र में स्थित अम्बेड़कर कॉलोनी कच्ची बस्ती, जयपुर में शैक्षिक कार्यक्रम की जरूरत और समुदाय के सकारात्मक रूझान के कारण सामुदायिक जनशाला खोलने की पहल की गई। प्रारम्भ में जब शिक्षक संस्था, संस्था समन्वयक एवं सस्था संचालक जब बस्ती में मीटिग करने पहुचे तो बस्ती के लोगों के कई सवाल थे। जैसे- यह स्कूल कौन चलायेगा, पैसा कौन देगा और यह कार्यक्रम कितने दिन चलेगा? समुदाय के लोगों को जनशाला कार्यक्रम का परिचय दिया गया एवं उनके सहयोग की मांग की गई। समुदाय के लोगों ने कुछ संतोष जाहिर करते हुए मंदिर के पास खुली जगह विद्यालय के लिए दे दी। शिक्षक की बच्चो के साथ लगातार की गई मेहनत एवं नियमितता से स्कूल खुली जगह से मंदिर के प्रांगन में मंदिर प्रांगन से पूजा गृह में स्थानातरित हुआ। पिछले सप्ताह ही समुदाय द्वारा स्कूल के लिए एक कमरे का निर्माण कर दिया गया है। अभी छत डलना बाकी है।

पुस्तकालय समुदाय से संवाद कायम करने का एक कारगर मंच रहा है। समुदाय की शिक्षक में आस्था का ही परिणाम हैं कि खुले मैदान से कक्षा-कक्षा तक का सफर संभव हो सका है। अब स्कूल बनने लगा है।

समस्या बनी समाधान

दिल्ली रोड़ पर घनी आबादी वाले क्षेत्र में स्थिति है राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय वन विहार।

विद्यालय में काफी बड़ा खुला मैदान है। समुदाय के कुछ युवक/किशोर इस मैदान में क्रिकेट खेलते थे। शाला भवन को भी काफी नुकसान पहुंचाते थे। संस्था प्रधान जी ने इन युवकों को बुलाया बातचीत की और कहा कि मैं आपका एक क्लब बना देता हूँ। आप यहॉ नियमित रूप से खेलें और विद्यालय में होने वाली चोरी, नुकसान आदि का ध्यान रखें। इस प्रकार युवकों का एक समूह बन गया। अब यह समूह विद्यालय की गतिविधियों में भाग लेता है और बाहरी तत्वों को विद्यालय में आने से भी रोकता है।

संस्था प्रधान बताते है कि जनशाला कार्यक्रम में जुड़ने के बाद समुदाय से नजदीकी रिश्ता कायम हुआ है। विधायक कोटे से एक लाख रुपये स्वीकृत हुए। 52 हजार का सहयोग समुदाय द्वारा दिया गया। इसके अतिरिक्त 2 कक्षा-कक्षों का निर्माण, 18,000 रु. की लागत का मुख्य द्वार, बिजली फिंटिग, स्टेज का निर्माण आदि कई भौतिक विकास के कार्य हुए है। समुदाय द्वारा 500 रु. देकर रात्रि चौकीदार की व्यवस्था भी की गई है।

महिला समूह, किशोरी समूह एवं अध्यापक अभिभावक परिषद गठित है एवं नियमित रूप से बैठक आदि में भाग लेते है।

पढ़ाना भी इतना दिलचस्प हो सकता है...

"पढ़ाना भी इतना दिलचस्प हो सकता है। लम्बे समय के शिक्षक काल में पहली बार अपने भीतर छुपी विभिन्न प्रतिभाओं का पता चला है", यह कहना है अध्यापिका श्रीमती शशिलता सिंघल का, जो राजकीय प्राथमिक विद्यालय रैगरों की कोठी, जयपुर में कार्यरत है। घाटगेट के पास घनी आबादी क्षेत्र में रैगर समाज के सामुदायिक केन्द्र में यह विद्यालय चलता है। पूर्व में समुदाय के साथ संवाद की स्थितियां बिल्कुल भी नहीं थीं। प्रथम प्रशिक्षण के पश्चात ही विद्यालय में छोटे-छोटे परिवर्तन दिखाई देने लगे।

आनन्ददायी गतिविधियों एवं शिक्षण सामग्री के प्रयोग से बच्चों का स्कूल में ठहराव बढ़ने लगा। वर्तमान में इस विद्यालय में 220 बच्चे अध्ययनरत हैं। उल्लेखनीय है कि पिछले वर्ष कक्षा 1 में अध्ययनरत सभी बच्चे कक्षा 2 में अध्ययनरत हैं। बच्चों के लगातार अनुपस्थित रहने पर शिक्षक घर-घर जाकर अभिभावकों से सम्पर्क करती हैं, जिससे बच्चे नियमित रहने लगे हैं।

समुदाय के साथ बातचीत करने से सकारात्मक प्रभाव पड़ा। पहले छोटे-छोटे कमरों में एवं खुले में कक्षाएं चलती थी। समुदाय द्वारा एक बड़ा हॉल बनाकर बच्चों को बैठने के लिए दिया गया। यहां महिला समूह एवं किशोरी समूह भी बना हुआ है। इनके लिए स्वास्थ्य वार्ता एवं विभिन्न प्रतियोगिताएं आदि आयोजित की जाती है।

सहायक शिक्षण सामग्री के साथ बच्चे तन्मयता से पढ़ाई करते रहते हैं। यहां बच्चों का शैक्षिक स्तर भी काफी अच्छा है।

शिक्षकों एवं संस्था प्रधान में आपसी सम्बन्ध मधुर है। संस्था प्रधान ने बताया कि जब भी शिक्षक कार्यशाला से वापस आती है, वह उत्सुकता से कार्यशाला में हुये कार्य की जानकारी लेती है एवं शिक्षकों को सहयोग देने के लिए तत्पर रहती हैं।

ब्रिज क्लास का रूपान्तरण सरकारी स्कूल में

मोती डूंगरी जोन स्थित झालाना कुण्डा बैंक तथा लाल खान कच्ची बस्ती में मेहनत करने वाले मजदूरों का समूह रह रहा है। अपने जरूरतों को पूरा करने के उद्देश्य से ग्रामीण क्षेत्र से आये हुए इस वर्ग का मानसिक, शारीरिक और शैक्षिक, किसी भी प्रकार का विकास नहीं हो पाया है।

आर्थिक दृष्टि से यह मजदूर वर्ग की बस्ती होने के कारण सभी लोग (महिला-पुरुष) सुबह से रात देर तक मजदूरी के लिए अपनी बस्ती से दूर जाते हैं। इस वजह से बच्चों पर कोई नियंत्रण नहीं है, इस बस्ती में ज्यादातर बच्चे कई कारणों सें शिक्षा से वंचित हैं जैसे कि :-

- शिक्षा के प्रति सभी लोगों में अरुचि
- राजकीय स्कूल दूर होना
- बाईपास सड़क की समस्या
- लोगों का नियमित रूप से गांव में आना-जाना

प्रथम (मुंबई) और जनशाला के सहयोग से बस्ती में शिक्षा से वंचित बच्चों के लिए ब्रिज कोर्स की सुविधा अप्रैल 2001 से की गई। बस्ती में 6 फाउण्डेशन वर्ग शुरू किये गये, जिनमें लगभग 150 बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। इन सभी वर्ग के लिए समुदाय ने सहायता के रूप में जगह उपलब्ध करवाये। समुदाय के लोग इन शिक्षकों से खुश थे।

स्कूल जाने का पहला अनुभव

तृतीय स्तर की दो बालिकाएं नूरबानो व अफसाना बानो दोनों बहनें हैं, उम्र 10 व 12 वर्ष है। ये लड़कियां कभी किसी स्कूल में नहीं गई, न ही कभी किसी केन्द्र पर। पढ़ाई के लिए पहली बार सामुदायिक जनशाला से ही जुड़ी हैं।

ये दोनों बालिकाएं राजीव नगर, सामुदायिक जनशाला में दिसम्बर 1999 से आ रही है। कभी काम होने पर ही छुट्टी लेती हैं अन्यथा रोज शाला आती है। इन दोनों लड़कियों ने अपने साथी बच्चों से जल्दी व पुख्ता ज्ञान प्राप्त किया। सुबह शाला स्कूल आते ही अखबार पढ़ती हैं, शाला में बालहंस व चंपक की पुस्तकें मंगवाई जाती है। उनमें से कहानियां चुटकले पढ़ती हैं अपने साथी बच्चों को भी पढ़कर सुनाती हैं। घर पर भी धनोपार्जन के कार्य करती है। चूड़ियों पर नगीने लगाना, पैन पर भी नगीने लगाना, घर पर नगीने घिसने की मशीन है तो नगीने घिसने का भी कार्य करती हैं। चरखे पर ऊन कातने का भी कार्य करती हैं। इनके घर के पास दो परिवार ऐसे रहते हैं, जिनके बच्चे सरकारी स्कूल में तीन चार साल से पढ़ रहे हैं, उनके बच्चे भी अखबार नहीं पढ़ सकते, जब वे इन्हें पढ़ता देखती हैं तो अपने बच्चों पर बहुत गुस्सा करती हैं कि तुम कब से स्कूल जा रही हो कुछ भी नहीं आता जाता और इनको देखो। पहले जब मैंने सर्वे किया था तो वे अपने बच्चों के नाम लिखवाने में भी रुचि नहीं ले रही थी, दीदी ये तो चार साल से सरकारी स्कूल में पढ़ रहे हैं, वहीं पढ़ेंगे मैंने कहा ठीक है कहीं भी पढ़ें पर पढ़ें जरूर। यही हमारा उद्देश्य है। आप वहीं पढ़वाना पर नाम लिखवा दो, अब वह बच्चों से कहती हैं, अबकी साल इसे भी अपने साथ ले जाना।

मुझे दुःख है कि अब ये लड़कियां आगे नहीं पढ़ पायेगी क्योंकि इनसे बड़ी दो बहनें अब ससुराल जाने वाली है। घर की जिम्मेदारी इन पर आ जायेगी, अब इनके अभिभावक आगे पढ़ाने के लिए मना कर रहे हैं। मैं फिर भी कोशिश कर रही हूँ कि वे थोड़े समय ही पढ़ने आये, पर आयें जरूर।

जून महीने के बाद जब बच्चों के सरकारी स्कूलों में नामांकन की स्थिति आई तो अभिभावक अपने बच्चों को दूर भेजने के लिए तैयार नहीं थे, वे चाहते थे कि उनकी ही बस्ती में राजकीय विद्यालय की सुविधा प्राप्त हो जाये। समुदाय की सहायता से जुलाई महीने में जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारम्भिक) श्री उमाकान्त ओझा जी को इस बस्ती में स्कूल को स्थानान्तरित करने का प्रस्ताव दिया गया।

ओ.टी.एस. कच्ची बस्ती का स्थानान्तरण पालड़ी मीणा होने के कारण उस स्कूल में बच्चों की संख्या नगण्य रह गई थी। झालाना कुण्डा महल स्कूल का प्रस्ताव मंजूर होने पर उस स्कूल को वहां स्थानान्तरित करने के आदेश राज्य सरकार ने जारी किये। प्रारम्भ में अध्यापिका श्रीमती निर्मल खेतरपाल को झालाना कुण्डा महल स्कूल में 16 अगस्त 2001 से स्थानान्तरित किया गया।

ब्रिज कोर्स के द्वारा इस स्कूल में 99 बच्चों का नामांकन होने वाला था, जिनमें से अभी 48 बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। स्कूल की शुरूआत विलम्ब से होने के कारण, कुछ बच्चों ने निजी स्कूल में प्रवेश लेने के कारण तथा दो बस्तियों के समुदाय में मतभेद के कारण शेष बच्चे स्कूल में नामांकित नहीं हो पाये। वर्तमान में इस स्कूल में कुल 56 बच्चे नामांकित है, जिनमें 22 बालक व 34 बालिकाएं है।

ममता बदल गई...

ममता (उम्र 10 वर्ष) हमेशा लड़कों के साथ रहने वाली लड़की थी। लड़कों से ही उसकी दोस्ती रहती थी। साथी बालकों के साथ शाला के बाहर की हुड़दंग बाजी कार्य में व्यवधान डालना व शिक्षक राजेन्द्र को मुंह चिढ़ाना उसका पंसदीदा शौक था। परन्तु शिक्षक के लगातार प्रयासों के पश्चात अब ममता शाला की एक प्रतिभावान व संजीदा बालिका है। वह शाला नियमित व सम्पूर्ण ठहराव वाली बालिका है। शाला समय के दौरान किसी भी वक्त उसे अपनी वर्कशीट या पट्टी पर सर झुकाये ध्यान से कार्य करते हुए देखा जा सकता है। पूछने पर कि ममता, अब शाला व सर कैसे लगते हैं? उसने शर्म से गर्दन झुका दी और मुस्कराते हुए धीरे से बोली *"बहुत अच्छा"*। समुदाय द्वारा शिक्षण कार्य के लिये रामदेवरा मंदिर स्थान निःशुल्क उपलब्ध करवाया गया है।

मन बदल गया...

निरमा (उम्र 8 वर्ष) बस्ती की ऐसी बच्ची थी, जो शुरू में शाला में नियमित थी परन्तु शैतानी करने पर एक बार अध्यापिका द्वारा टोके जाने पर शाला आना बन्द कर दिया। साथ ही लड़कियों को भी भड़का कर शाला में आना बंद करवा दिया। अध्यापिका के स्नेहिल व्यवहार व बार-बार समझाने से बालिका नियमित है और होशियार भी है। सभी लड़कियों को वापस जोड़ने के अतिरिक्त वह सभी शाला कार्यों में अध्यापिका (नीता सब्दानी) की मदद भी करती है।

टीला नं. 0 से सटती हुई बस्ती शांति कॉलोनी के लोग शिक्षिका के कार्य एवं व्यवहार से इतने प्रभावित हैं कि उन्होंने उसे अपनी तरफ शाला खोलने का निमंत्रण दिया है।

काम के बाद पढ़ाई भी

सोनू, शाला के प्रारम्भ के दिनों अनियमित बच्ची थी। परन्तु बच्ची की सीखने की क्षमता को देखकर शिक्षक द्वारा उसे लगातार प्रयास किया गया। शिक्षक के पढ़ाने के तरीके व्यवहारगत, सहजता, मधुरता, अपनेपन व प्रेम ने सोनू को जनशाला में बिल्कुल नियमित कर दिया है। अब सोनू सुबह दूसरों के घरों में काम करने जाती है और जब 10.30 बजे वापस घर लौटती है तो तुरन्त बिना खाना खाए शाला आ जाती है। जब तक शाला चलती है, शाला में रुकती है। शाला की यह एक बेहतर लड़की है।

तेरा बाप भी नहीं पढ़ा सकता

प्रारम्भ में जब हमने धूलकोट बस्ती में प्रवेश किया तो समुदाय ने पूर्णतः नकारात्मक सहयोग किया। उन्होंने दो टूक जवाब दिये कि *"तू तो क्या तेरा बाप भी नहीं पढा सकता हमारे इन बच्चों को। जाओ और कहीं अपनी तनख्वा पकाओं हमें अपने हाल पर छोड दो, हां अगर कोई सरकार सहायता देती है तो बच्चों की जगह हमें ही दे दो।"* हम भी नये थे हमें समझ नहीं आया कि इनका क्या जवाब दें। किंतु हमने उन्हें हंसकर कहा कोई बात नहीं एक बार हम सब कोशिश तो कर ही लेते है। इसी प्रकार 2 माह तक चलता रहा। एक समाज सेवी ने जगह दी जिस पर छत नहीं थी, उन्होंने टीन शेड भी लगवा दी किंतु वहां पूरा माहौल शरारती होने के साथ ही साथ उन टीनों पर पत्थर फेंककर आवाज का आनन्द लेते थे। हमें उम्मीद थी कि कोशिश करने पर हार नहीं होगी और अध्यापक संजय सिंधी जी ने धैर्य का साथ न छोड़कर कार्य करते रहे, किंतु उस दिन हद हो गयी जब पत्थर कमरे की जाली तोड़कर अन्दर बच्चे के सिर पर आ लगा और सिर फूट गया। संजय जी उस बच्चे को अस्पताल ले गये तथा साथ ही साथ दो दिन का अवकाश करके, हम सभी ने सोचा कि यदि कोई स्थान बदल ले तो अच्छा होगा। इस कार्य का जिम्मा श्री ब्रह्मानन्द जी, श्री राजकुमार जी एवं समन्वयक नेमीचन्द जी ने लिया। समुदाय में बातचीत की तथा मेनरोड पर एक शिव मंदिर में एक बड़ा कमरा तथा बाहर खुली जगह देने का प्रस्ताव रखा, समुदाय ने काफी सोच-विचार कर यह जगह देने की सहमति दी।

इस प्रकार 6 माह बाद जगह बदली गयी किंतु समुदाय वही रहा। यहां उस प्रकार का माहौल भी नहीं हैं। लोग शराब पीकर अब शाला में भी नहीं आते, ना ही अध्यापक से गन्दी तरह से बात करते हैं। हंसते हुए नमस्कार करते है तथा अब शाला के बारे में मासिक मीटिंग भी करते है। आज यहां स्थिति काफी अच्छी है। यह सब परिणाम है - धैर्य, लगन, मेहनत, नियमितता एवं सहनशीलता का, कोशिश की जायें तो क्या कुछ संभव नहीं हैं।

शिक्षक की जुबानी

मैं लगभग दो वर्ष से जनशाला कार्यक्रम के तहत सामुदायिक जनशाला बंधा बस्ती में शिक्षक पद पर कार्यरत हूँ। बस्ती का भौगोलिक अनुभव मेरा यह रहा है कि वे लोग किस प्रकार से इतने छोटे-छोटे कमरों में अपना रहना बसेरा करते हैं, चाहे वह बारिश का मौसम हो, गर्मी का मौसम हो, या सर्दी का। इन छोटे-छोटे कमरों में लगभग 10-12 व्यक्ति कैसे रहते होंगे। कल ही एक महिला मुमताज जी से बातचीत हुई कि जीनत की अम्मी के 12 बच्चे हैं और सिर्फ एक ही कमरा है और सारे व्यक्ति उसी में खान-पान, रहन-सहन करते है, इस बात को सुनकर मैं हैरान रह गया और मेरे लिए तो विश्व का नवां आश्चर्य लगा। वैसे बस्ती में लोग बड़े ही शंकालू प्रवृत्ति के होते हैं, वे किसी भी बात पर सहजता से विश्वास नहीं करते हैं, लेकिर दिल के बड़े साफ होते हैं तथा किसी भी बात के लिए शुरू में इतना जोश दिखाते है कि सुनने वाला व्यक्ति यह सोचने लगता है कि ये लोग कार्य करने में कितनी दिलचस्पी रखते है, लेकिन क्रियान्वयन में ऐसा इतमें देखने को नहीं मिलता है।

दूसरा यह अनुभव हुआ कि यहां कुछ प्रभुत्वशाली लोगों का बोलबाला रहता है, इसीलिए सामान्य आदमी किसी भी काम

की पहल स्वयं नहीं करता और ये प्रभावशाली लोग इनके भोलेपन व अज्ञानता का नाजायज फायदा उठाते हैं। यहां महिलाएं पहल करने में संकोच करती है, उनका विचार है कि यहां पुरुष ही प्रधान होते हैं, हम कोई पहल करेंगे तो हमें नीचा दिखाकर दबा दिया जाएगा। बस्तियों में जहां मुस्लिम बाहुल्य है, वे लोग अपने बच्चों की पढ़ाई की तरफ बहुत ही कम ध्यान देते हैं और छोटी उम्र में ही काम पर लगा देते हैं जहां उनकी मजदूरी नगण्य होती है, मात्र 200-300 रुपये मासिक। बस्तियों में कई प्रकार के अवैधानिक काम भी होते हैं, जैसे - जुआबाजी, सट्टेबाजी आदि। इस प्रकार बस्ती में लोगों का जीवन विभिन्न सुख-सुविधाओं से वंचित है, जिसका मुख्य कारण उनकी आर्थिक तंगी एवं खराब आदतें है।

चंचल शाकरा

शाकरा, उम्र 11 वर्ष, मेहनत नगर हटवाड़ा सामुदायिक जनशाला, जयपुर में पढ़ रही मनमौजी प्रवृत्ति की बच्ची है। जो बहुत जिद्दी किस्म की लड़की है। दिनभर इधर-उधर घूमना और सड़कों पर खेलना इसका काम है। इसको बड़ों से किस तरह बात की जाती है या अपने साथियों से भी किस तरह बातचीत की जाती है, इसे इस बात का बिल्कुल भी ज्ञान नहीं है। शाला में भी इसका आना जाना लगा रहता है। अव्वल तो वह शाला में रूकती नहीं और जितनी देर रूकती है अन्य बच्चों के साथ छेड़खानी करती है या फिर जोर-जोर से गाने गाती है। शिक्षिका के प्रयास से अब शाकरा शाला में रूकने लगी है और उसकी आदतों में भी सुधार हुआ है।

दीदी मैं भी पढ़ना चाहता हूं

आरिफ जिसकी उम्र 13 वर्ष, रंग गोरा व स्वभाव से शरारती है, सामुदायिक जनशाला शेख अली बजारा बस्ती, जयपुर में पढ़ रहा है। आरिफ के सर से बचपन में ही माता-पिता का साया उठ गया। मां की गोद क्या होती है? वह नहीं जानता। बाप का प्यार क्या होता है? उसने नहीं देखा। आरिफ बचपन से ही नानी के पास रह रहा है। नानी के लाड़ प्यार और आस-पड़ोस के बच्चों के साथ रहकर वह शरारती हो गया। नानी ने उसकी शरारतों से तंग आकर उसे एक स्कूटर मरम्मत की दुकान पर काम सीखने के लिए भेज दिया। एक दिन अकस्मात् वह मुझे बस्ती में मिला और कहने लगा है कि वह भी पढ़ना चाहता है, परन्तु पैसे नहीं है और पढ़ने के लिए नानी से अनुमति लेनी पड़ेगी। तब मैंने उसकी नानी से बात कर उन्हें समझाया और अपनी जिम्मेदारी पर शाला में लाया। तब से यह बच्चा नियमित रूप से शाला में आता है। आरिफ अब अपना नाम लिखना भी सीख गया है और कुछ दूसरे शब्द जैसे कप, बस, नल, जग, कर आदि पढ़ व लिख लेता है। अब आरिफ मन लगाकर पढ़ाई पर ध्यान देता है। उसकी शरारतों में भी अब कमी आई है। उसे शाला में आना और मुझसे बात करना अच्छा लगता है। आरिफ अपनी सारी समस्याएं मुझे बताता है।

जब मैं उसके घर पर जाकर मिली

जब से शाला प्रारम्भ हुई तब सलीम चार-पांच दिन शाला में आया और इसके बाद वह शाला में आया ही नहीं। जब बच्चों ने मालूम किया तो पता चला कि सलीम का घर बहुत दूर है। शायद इसी कारण से वह नहीं आ रहा है। सलीम के घर का पता मालूम कर मैं उसके घर गई। मुझे देखकर वह बच्चा काफी खुश हुआ। उसने मुझे अपने साथियों से भी मिलाया। उसके माता-पिता से भी बातचीत हुई, तो पता चला कि सलीम पहले किसी स्कूल में पढ़ने जाता था किन्तु घर की आर्थिक स्थिति के खराब रहते इसका स्कूल जाना बंद कर दिया गया। सलीम के पिता ट्रॉली चलाते हैं, कभी-कभी खुला धन्धा भी कर लेते हैं। सलीम की मां घर में ही रहती है। बच्चे के पिता से मैंने कहा कि आप चिन्ता ना करें यदि यह पढ़ना चाहता है तो आपका खर्चा कुछ नहीं होगा। मैं इसे रोजाना अपने स्कूल में ले जाया करूंगी, जाते समय इसे छोड़ दिया करूंगी। अब सलीम शाला में मेरे साथ रोजाना आता है और मन लगाकर पढ़ता है। इसने शब्द व वाक्य बनाना सीख लिया है।

लड़का-लड़की एक समान

वकीला, जिसकी उम्र 14 वर्ष है बस्ती में अपने माता-पिता, बड़ी बहन और दो छोटे भाईयों के साथ रहती है। प्रारंभ

में जब शाला शुरू हुई तो वकीला रोजाना आती और दरवाजे की ओट में खड़ी हो जाती। कुछ देर बाद भाग जाती। मालूम करने पर पता चला कि वह शाला में आने वाले बच्चे आमीर व वकील की बहन है। दूसरे दिन जब वह शाला आई तो मैंने उसे बुलाकर बातचीत की तो उसने बताया कि वह भी पढ़ना चाहती है किन्तु उसकी मां और बड़ी बहन उससे घर का कामकाज कराते है। शाला के बाद मैं वकीला के घर गया एवं उसके पिता से बात की तथा उन्हें समझाया कि यदि बच्ची पढ़ना चाहती है तो आप इसे पढ़ने के लिए शाला में भेजा कीजिए तो उन्होंने कहा कि हमारे समाज (मुस्लिम) में लड़कियां पढ़ने नहीं जाती। मैंने उनसे बातचीत कर उन्हें संतुष्ट किया। लड़का-लड़की समान ही होते हैं। काफी प्रयास के बाद वह वकीला को शाला में भेजने को राजी हुये। अब वकीला नियमित रूप से शाला में आती है और शाला व्यवस्था से लेकर शाला अन्त तक पूर्ण सहयोग करती है तथा पढ़ती है। बहुत कुछ पढ़ना लिखना भी अब वह सीख गई है।

आशान्वित नज़रों से

पूजा जब से शाला शुरू हुई है तब से शाला में नियमित आती रही है। लेकिन यह बाल, हाथ-पैर व मुंह बिना धोए ही शाला आती थी। मैं शुरू-शुरू में उससे इस संदर्भ में बात करता तो वह कोई जवाब नहीं देती। एक दिन मैंने उससे बहुत अधिक बात की तो उसने धीरे से कहा, सर! मुझे समय नहीं मिलता है। मैंने पूछा यहां से जाने के बाद क्या करती हो ? तो शरमाती हुई बोली सर ! घर का काम करती हूँ। मैंने कहा आपकी मम्मी को कहा करो कि वे घर का काम करे तो पूजा ने धीरे से कहा मेरी मम्मी मर गई। उसका यह जवाब सुनकर मैं सन्न रह गया। मुझे थोड़ा समय भी यह समझने में नहीं लगा कि इसलिए ही वह समूह में देरी से जुड़ती है। उससे मैंने पूछा पापा कुछ नहीं करते? तो वह कहने लगी, पापा बाहर काम करते हैं और शराब भी पीते हैं। इसलिए कुछ और घर पर नहीं करते। मैं एक दो-दिन में ही उसके पापा से मिला तो महसूस हुआ कि बच्ची कितनी मुश्किलों से शाला आती है। मैंने उनसे नामांकन फार्म पर हस्ताक्षर करने को कहा तो उन्होंने मना करते हुए कहा साहब! इसको घर का काम सीखने दो। पढ़कर कौनसी नौकरी करेगी। इस समय पूजा भी वहीं खड़ी थी और मेरी तरफ आशान्वित नजरों से देख रही थी कि सर मुझे स्कूल आने देंगे? उसने मुझसे कहा सर! कल मैं स्कूल आऊँ या नहीं? मैंने कहा क्यों नहीं आओ, रोज आओ लेकिन घर का काम करके नहीं तो पापा तुम्हें मारेंगे। यह बच्ची रोज शाला आती है और इस समय भाषा व गणित में द्वितीय स्तर पर कार्य कर रही है। इससे महसूस होता है कि किसी में लगन हो तो कोई समस्या नहीं होती है एवं वह आगे जरूर बढ़ता है।

माँ की उम्मीदों का सहारा -

कैलाश प्रारम्भ से ही जनशाला में आता था। अप्रैल महिने में ही कैलाश 2 या 3 बार मेरी जनशाला में देसी शराब पीकर आया। वैसे तो कैलाश की ऑखे हमेशा चढ़ी रहती है। जब मैंने कैलाश की मॉ अनिता जी से बात की तो उन्होंने बताया कि इसकी दादी, बाप, चाचा, सभी तो शराब पीते है। कमाते-धमाते तो है नहीं, मार-पीट व गाली-गलौच और करते हैं। कैलाश की उम्र 8 वर्ष की है। मैंने लगातार सम्पर्क करके अनिता जी को समझाया कि अगर कैलाश ने शराब पीना नहीं छोड़ा तो आपके हाथ से आपकी उम्मीद का सहारा भी जाता रहेगा। अब अनिता जी कैलाश पर बहुत ध्यान देती है। वह मेरी जनशाला का नियमित व समय का पाबन्द छात्र है। उसकी मॉ भी समय पर आकर इसकी रिपोर्ट रखती है।

सीखने की तन्मयता

विषम परिस्थिति में भी पढ़ने की लगन रखने वाली ऐसी ही एक अन्य छात्रा है काजल। इसके पिता सुबह जल्दी ही काम पर चले जाते है क्योंकि इस बालिका के पिता प्रातः उठते ही जल के स्थान पर शराब पीते ही मारपीट शुरू करते है और कहते हैं घर का पूरा काम कर, पढ़ाई काम नहीं आएगी। बुरी तरह डाटना, मॉ को मारना, इन सब बातों का यह लड़की विरोध करती है और फिर भी पढ़ती हैं, बहुत कम अनुपस्थित रहती हैं। पढ़ने की ललक उसे हमेशा स्कूल आने के लिये प्रेरित करती है।

भाषा में अभी तक जो पढ़ाया उसे सहजता से पढ़ती हुई, याद करती है, लिखती है। इस बालिका के पास स्लेट व कापी पेंसिल नहीं होने के बाद भी यह बालिका किसी न किसी तरह से पूरी तरह सीखने का प्रयास करती है।

गणित में अभी तक जो पढ़ाया, वह उसे पूरी तन्मयता से सीखती है।

गोद में छोटा भाई लिये प्यारी सी हुमा...

एक अच्छी लड़की, सांवली सूरत जब शुरू में आयी थी तो बिखरे बाल, गन्दे कपड़े। हाथ में छोटा भाई। आते ही बोली

दीदी! मैं पढ़ना चाहती हूँ। वह आने लगी, लेकिन कभी आती कभी नहीं। घर गयी तो पता चला कि उसकी माँ को कोई रुचि नहीं है पढ़ाने में, उनके लिये काम करना जरूरी है। फिर भी वह समय निकाल कर आती। जिज्ञासा और पढ़ने की लगन को देखते हुए मैंने उससे कहा कि अगर तुम पूरे समय नहीं रूक सकती तो आधा घण्टा ही रूको, पर आओ। साथ में उसकी माँ छोटे भाई को भी भेजती, कभी उसे खिलाती, कभी पढ़ाई करती। इस तरह वो शब्दों को सीखने लगी। सबसे ज्यादा और सबसे जल्दी सीखने की चाहत, आज हुमा सबसे ज्यादा शब्दों को पढ़ना और वाक्य बनाना सीख गयी है। बाल बनाकर आती है, नाक साफ करके आती है और कपड़े भी साफ पहन कर आती है।

कभी-कभी तो जब उसका भाई बहुत रोता है तो उसे खुद घर पर छोड़ने नहीं जाती बल्कि किसी और के साथ भिजवाती है, कारण मेरे जाने पर अम्मी घर पर रोक लेगी तो मैं पढ़ूँगी कैसे ?

सर जी, आपकी कुर्सी नहीं

जनशाला के संदर्भ में **बच्चे** कहते हैं कि इस प्रकार से पढ़ना-पढ़ाना हम पहली बार देख रहे हैं जबकि अन्य स्कूलों में तो मास्टरजी केवल ब्लैक बोर्ड पर कुछ वर्ण, स्वर लिख देते हैं और बच्चे स्लेट पर लिख लेते हैं और याद कर लेते हैं। अन्य स्कूलों में तो सर कुर्सी पर बैठकर पढ़ाते हैं और आपके यहां तो कुर्सी हीं नहीं। कुछ बच्चे तो यह भी कहने से नहीं चूकते कि यह कोई स्कूल थोड़ी ही है, यह तो पंडित जी का टूटा-फूटा घर है, इसमें सर का क्या दोष है। लेकिन **बच्चे** कहते हैं कि और स्कूलों से बढ़िया ही है, सर पीटते नहीं, खेल-खिलाते हैं और खेल-खेल में हम को पढ़ा भी देते हैं।

समुदाय का कथन

क्षेत्र के निवासियों को शाला की जिम्मेदारी देने से लगन अधिक बढती है एवं सभी गतिविधियों पर नजर रखने की ललक एवं जिम्मेदारी महसूस होती हैं।

रामजीलाल, अध्यक्ष

शिक्षा के साथ अध्यापक द्वारा सामाजिक चेतना के संबंध में सुझाव देना व विचार जानना अच्छी प्रक्रिया है।

राजेन्द्र चौधरी (समुदायवासी)

साहब, अब जरूरत है इन शालाओं को नियमित करने की, कहीं और कार्यक्रमों की तरह ही बीच में ही बन्द मत करना, अन्यथा हमारे उत्साह एवं भागीदारी का अर्थ क्या होगा ?

समुदायवासी - जे.पी. कॉलोनी, जयपुर

आपके शाला में बच्चे पढ़ने से बच्चों में अदब (संस्कार) आयी है, जब भी मिलते हैं सलाम करते हैं तथा अब कुछ अभद्र बातें भी कम करते हैं।

समुदायवासी - फकीरों की डूंगरी, जयपुर

ये शालाएं अच्छी हैं, जिसमें हमें भी सलाह देने एवं इन्हें देखने का मौका मिलता है।

समुदायवासी - छीपीवाड़ा, जयपुर

शाला हमें भी ठीक लगती है लेकिन सरकार से भवन व्यवस्था होनी चाहिये। शिक्षा के बारे कहते हैं कि सर जो खेल-खेल में तालीम देते हैं, उसे बच्चे सहज रूप से सीख लेते हैं।

सिराज मोहम्मद (समुदायवासी)

आपकी यह शिक्षा देने की प्रक्रिया मुझे बहुत ही अच्छी लगती हैं, जिसमें बच्चों को प्यार मोहब्बत से आप तालीम देते हैं और सिखाने में जो खेल गतिविधियां अपनाते है, उसे बच्चे शीघ्र समझ के साथ सीख लेते हैं। मेरे बच्चों को तो बहुत ही अच्छी लगती है और यह एक साल में पुस्तक पढ़ने लग गया हैं। मैं कहती हूं कि ऐसी सिखाने की प्रक्रिया सभी स्कूलों में लागू होनी चाहिये ताकि बच्चे निर्भीक होकर आनन्द के साथ सीख सकें।

मुमताज बेगम (समुदायवासी)

शिक्षकों की जुबानी

जनशाला कार्यक्रम शिक्षा के क्षेत्र में एक बहुद्देशीय कार्यक्रम है जो कार्य करने वाले अध्यापक, कार्य-क्षेत्र के निवासी एवं वहां के बच्चों को विभिन्न दृष्टि से प्रतिष्ठित होने के आयाम एवं अवसर प्रदान करता हैं। इस कार्यक्रम का कार्य नियोजन बहुमुखी विकास के अक्स लिये होता है। कार्यक्रम का संचालन इस प्रकार होता है कि जुडाव रखने वाले सभी पक्ष चिन्तनमय होते हैं जो अपने आप में मार्गदर्शक होते हैं। आपसी समन्वय की भावना को प्रबलता मिलती है। शिक्षा के क्षेत्र के साथ-साथ अन्य प्रक्रियाओं को सम्मिलित करना भी एक अच्छा संयोजन है।

ब्रह्मानन्द शर्मा,
सा. जन. मनसा माता की खोल, जयपुर

शाला शुरू करते वक्त मैं अकेली ही सहयोग शाला में बच्चों कौ जोड़ने के प्रयास करती थी किंतु अब मेरे साथ स्वयं बच्चे व समुदाय बराबर सहयोग कर रहे हैं। मेरा बच्चों तथा समुदाय के साथ प्रगाढ़ रिश्ता होता जा रहा है, किसी अवकाश में भी यहां कौ याद आती रहती हैं।

सीमा शेखावत,
सा.जन. छीपीवाडा बस्ती, जयपुर

सामुदायिक जनशाला कार्यक्रम बिल्कुल अलग कार्यक्रम है तथा समुदाय के सभी क्षेत्रों को जोड़ते हुए इसकी रीढ़ शिक्षक हैं। उनके साथ अच्छा प्रबन्ध करके इसे और प्रभावशाली बनाना होगा। समुदाय कौ देख-रेख में कार्य करना अपने कार्य करने में रुचि बढ़ाता है। हमें लगता है कि हम जिनके लिये कार्य करे वे ही हमें ज्यादा से ज्यादा देखें।

चन्द्रप्रकाश निगम,
सा.जन. पर्वतपुरी बस्ती, जयपुर

सामुदायिक जनशाला अच्छा कार्यक्रम है, इसमें समुदाय से इतने घनिष्ठ संबंध हो गये हैं कि उन्होंने अपने बच्चों को पूर्ण रूप से हमें सौप दिया है, तथा बच्चें भी हमसे कहते है कि दीदी आप एक भी छुट्टी मत किया करो, छुट्टी के दिन हमारा मन नहीं लगता। इस कार्यक्रम में बच्चे-शिक्षक तथा समुदाय में बिल्कुल भी दूरियां नहीं हैं। समुदाय के सम्पर्क से ज्यादा आदर मिल रहा है।

विनीता सक्सेना,
सा.जन. फकीरों की डूंगरी, जयपुर

सामुदायिक जनशाला कार्यक्रम इसलिये अच्छा कार्यक्रम है क्योंकि इसमें आने वाली सभी समस्याओं का समाधान समुदाय के द्वारा कर लिया जाता हैं। शिक्षक अपनी स्वेच्छा के अनुसार कार्य करने हेतु स्वतंत्र है जिसके चलते शिक्षक मन से कार्य करता है शिक्षक पर कोई दवाब नहीं है।

सूर्य प्रकाश शर्मा,
सा.जन. फकीरों की डूंगरी, जयपुर

इस कार्यक्रम से जुड़ने के बाद स्वयं में आमूल-चूल परिवर्तन हुये हैं। एक जिम्मेदारी की भावना आयी है। बच्चों तथा समुदाय का जुड़ाव उल्लेखनीय है। बच्चे दो दिन अन्य स्कूलों में जाने के बाद वापस शाला में आ जाते हैं। बस्ती वाले मुझे परिवार का ही सदस्य समझते हैं। अभी इस कार्यक्रम में कुछ सुधार की गुंजाईश मानता हूँ। ऊपरी अधिकारी भी इस कार्यक्रम को बिना भेदभाव के पूर्ण तन-मन से सहयोग करें।

राजकुमार पारीक,
सा.जन. जे.पी. कॉलोनी बस्ती, जयपुर

सामुदायिक जनशाला अपने नाम को सार्थक कर रहा है। अब समुदाय वास्तविकता से शाला से जुड़ने लग गया हैं। जिसके बेहतर परिणाम भी आने लगे हैं।

मंजू रानी अग्रवाल,
सा.जन. जे.पी. कॉलोनी, जयपुर

बच्चों के मुख से

मास्टर आपणी स्कूल में बस्तों भी कोनी लानों पड़े और ड्रेस भी कोनी बनवाया। यहां पिटाई कोनी होवें जो अच्छी लगती है और खेल भी लेते हैं।

गजराज

इस शाला में पढ़ाई के साथ-साथ खेल तथा बालगीत भी होते हैं।

रेखा (छीपीवाड़ा, जयपुर)

यहां दीदी अच्छी पढ़ाई कराती है। हमारे पास बैठकर समझाती है। गलत करने पर रोष नहीं होती।

कैलाश (छीपीवाड़ा, जयपुर)

हमारा शाला के अलावा कहीं मन ही नहीं लगता, सिर्फ शाला में ही मन लगता है।

जाकिर (जे.पी. कॉलोनी, जयपुर)

सर, आप इन शालाओं की रविवार की छुट्टी मत किया करो। हम इस दिन यूं ही घूमते हैं।

रेखा (महावर कॉलोनी, जयपुर)

सर, हमें अच्छे-अच्छे तरीकों से पढ़ाते हैं। हम कभी बोर नहीं होते। ऐसा लगता है कि पढ़ते ही जायें।

चांद (महावर कॉलोनी, जयपुर)

मेरा यहां मन लगता है तथा गलती पर पिटाई नहीं होती, इसलिए मुझे शाला अच्छी लगती हैं।

मैना (विजय नगर, जयपुर)

यह लड़की शुरूआत से जनशाला से जुड़ी है और यह कहती है कि मेरे को तो यह स्कूल बहुत ही अच्छी लगती है और सर हमारे साथ पढ़ाने में खूब मेहनत करते हैं, साथ ही शाला व्यवस्था में स्वयं अपना हाथ भी बंटाते हैं जबकि दूसरी स्कूलों में तो सर तो साफ-सफाई संबंधित काम करते ही नहीं और मेरे को पुस्तक पढ़ना आने लगा है।

फरजाना (बंधा बस्ती, जयपुर)

यह कहता है कि जनशाला घणी प्यारी लागे छः क्योंकि यहां पर सर और बच्चों के बीच एक खुला रिश्ता है, हम सर से खुलकर बातचीत करते हैं जबकि अन्य स्कूलों में ऐसा कतई देखने को नहीं मिलता।

शाबिर (बंधा बस्ती, जयपुर)

शराबबंदीः थियेटर कार्यशाला - एक अनूठा अनुभव

दिनांक 6 अगस्त, 2000 को प्रातः 9.00 बजे हवामहल पूर्व जोन के सामुदायिक जनशाला के 35 बच्चों ने प्रभात फेरी के साथ दिन की शुरूआत की, जिसका नारा था *शाला में शाला जनशाला*। चलो भाई चलो जनशाला ही चलो। इसमें बस्ती वालों को लगा की अवश्य ही कोई अच्छा प्रोग्राम होने वाला है। अतः सभी लोग जल्दी-जल्दी अपने काम निपटा कर मन्दिर में आ गए।

नाटक के पहले एक चेतना गीत हुआ *"थाने कईयां समझाऊ जी भोला नाथ दारूड़ों जी पीवों छोड दो"*, यह गाना शिक्षिका द्वारा ही लड़कियों को तैयार करके दिया था।

इस नाटक को देखने लगभग पूरी बस्ती के लोग एकत्रित हो गये, जो लोग मन्दिर परिसर में नही आये वे दिवारों पर बैठ गए। मकानों की सारी बालकनियां व बरामदे भर गए, लोग धूप में भी छतों पर खड़े होकर हमारे कार्यक्रम को देख रहे थे, जिसमें दो बालगीत भी शामिल थे और जोर-जोर से तालियां बजा रहे थे, ऐसा लगता था मानो कोई मेला लग गया हो, लोग धक्का-मुक्की पर उतर आए थे।

कहानी

एक परिवार में एक दम्पत्ति अपने चार बच्चों के साथ रहते हैं। उस दम्पत्ति की बुजुर्ग महिला सास भी उन्हीं के साथ रहती है। पति बहुत शराब पीता है। कमाता नहीं है और अपनी पत्नी सुनीता के साथ बेहद मार पिटाई करता है। उसकी पत्नी चूना ढोंने का काम करती है, जिसके साथ उसकी दो पुत्रियॉ आशा, लक्ष्मी भी जाती है। दो लड़कें जिनका नाम रामू, श्यामू है, सारे दिन गलियों में गाली-गलौच करते है तथा मार पिटाई करते है। पति की मां अकसर अपने बेटे की भड़काने का कार्य करती है और अपनी पुत्रवधू को पिटवाती रहती है तथा खुद भी शराब पीती है।

शुरूआत **- सर्वप्रथम रामू, श्यामू लड़ाई करते है, तो उनके पिता शराब के नशे में बीड़ी पीते हुए आते है और उन्हें मारते है। इसके बाद अपनी मां के साथ बीड़ी पीने बैठ जाते है। दोनों मां बेटे बाते करते है कि रात होने को आई अभी तक बहू-बेटियां आई नहीं है। भूख बडी जोर से लग रही है। इतने में सुनिता, बेटी आशा और लक्ष्मी आती है। आते ही सास भड़क जाती है कि पुत्रों की भूख प्यास की चिन्ता नहीं है। क्या! पति-पत्नी में वार्तालाप होता है और पत्नी खाना बनाकर उन्हें खिलाती है। बेटियां झाड़ू, बर्तन, करके सब सो जाते हैं। सुबह सास कुलछनी, कलमुही कहकर अपनी बहू को उठाती है और चाय बनाने को कहती है। इसके बाद पत्नी खाना बनाकर जाने लगती है तो पति उससे पैसे मांगता है, जो पत्नी ने कमाए हैं। वह सामान लाने का बहाना बनाती है तो दोनों में मार-पिटाई व गाली-गलौच होती है तथा पति पत्नी के पैसे छीनकर शराब खरीदने चला जाता है। दोनों बच्चे खेलते हुए घर आते है तथा शराब की बोतल देखकर थोड़ी-बीड़ी पी लेते है और उन्हें जोरों का चक्कर आने लगता है तथा वे बेहोश होकर गिर जाते हैं और प्रश्न चिन्ह? पर नाटक खत्म होता है।**

समुदाय से सवाल करने पर प्रतिक्रियाएं

प्र१न-1 बच्चों ने शराब क्यों पी?

उत्तार समुदाय का एक सदस्य - क्योंकि बच्चे को जिज्ञासा भी थी, इस बोतल में पड़ी वस्तु क्या है और इसका स्वाद कैसा है।

दूसरा सदस्य - बच्चे यह जानना चाहते थे कि पिताजी और दादी इसे क्यों पीते हैं और इसके पीने का क्या असर होता है।

प्र१न-2 क्या लड़की का कोई भविष्य होगा?

उत्तार समुदाय की एक महिला रामप्यारी जी - अभी लड़की का क्या उसका तो जन्म ही काम करने के लिए होता है।

दूसरे सज्जन - उसी शराबी की बेटी है। कोई शराबी ही ब्याह कर ले जायेगा।

तीसरा सज्जन - अभी लड़की का क्या भविष्य कोई भला आदमी मिल गया तब तो ठीक है, नहीं तो कमाती तो है। पेट तो भर ही लेगी।

प्र१न-3 क्या पत्नी यूं ही कमा-कमा कर पति को देगी?

उत्तार एक सज्जन - क्यों नहीं देगी, पति कमाये या पत्नी बात तो एक ही है।

दूसरा सज्जन - नहीं जी पत्नी अलग अपने पति से पृथक भी रह सकती है, जो कमा सकती है। वह अपने पति से मुकाबला भी कर सकती है।

प्र१न-4 समुदाय की सहभागिता को मद्दे नजर रखते हुए पूछा गया की हम इस नाटक में क्या बदलाव कर सकते है।

उत्तार समुदाय वालों ने कहा - मासूम बच्चों की हालत देखकर पिता शराब पीना छोड़ सकता है। दादी के व्यवहार में भी अन्तर आ सकता है।

दूसरे व्यक्ति - बच्चों की मॉ अपने पति से बच्चों के भविष्य की अच्छाई के लिए निवेदन कर सकती है।

कार्यक्रम की सफलता के आयाम

अतः थोड़ी भी सफलता आशा की किरण की तरह सामने आती है। आज के कार्यक्रम की सफलता या नवीनता, इन अनुभवों के साथ गुजरा एक लम्बा सफ़र है, जिसमें निम्नलिखित आयाम निकल कर आये हैं:

- बच्चों तथा अभिभावकों ने अन्ततः कार्यक्रम को अपनाया है, इससे बच्चों की संख्या बढ़ी हैं।
- शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी है जिससे बच्चों ने शिक्षा की मुख्य धारा में जुड़ने का भी प्रयास किया है।
- समुदाय के साथ एक विश्वास कायम हुआ एवं संबंध सुदृढ़ हुये हैं।
- बच्चों में आत्म विश्वास की भावना जागृत हुई है, पहले बच्चों में झिझक थी, अब वे निडर होकर बात करते है तथा गीत व कविता भी सुनाते हैं।
- स्वयं की स्वच्छता एवं शाला स्वच्छता के प्रति जागरूक है अब बच्चे नहाकर, बाल बनाकर, नाखून काटकर, साफ कपड़े पहनकर आते है, अपनी जनशाला भी साफ रखते हैं।
- बच्चों में पढ़ाई के प्रति भी रुचि बढ़ी है, वे विषयों को एकाग्रता से पढ़ते है।
- बच्चों में नियमितता बढ़ी है।
- सभ्य भाषा का बच्चे उपयोग करते है, लड़ाई-झगड़े कम करते हैं।
- बच्चों में शराब, धूम्रपान, गुटखा खाने की प्रवृत्ति थी, जिसमें प्रभावशाली कमी आयी हैं।

अंत तक पढ़े ये सब अनुभव कार्यक्रम के अन्तर्गत अब तक के सफ़र की सफलता की जुबानी कहते हैं। ये मात्र कुछ उदाहरण हैं प्रत्येक कार्यकर्त्ता जो इन विकट स्थितियों के बीच कार्य करता है, अनुभवों के धनी हैं। शहरी क्षेत्र के वंचित वर्ग के लोगों के बीच शिक्षा के लिये कार्य करना प्रारम्भ से ही चुनौतीपूर्ण रहा है।

यह सफ़र यूं ही चलता रहेगा। इसी आशा और विश्वास के साथ यह सफ़रनामा समर्पित है बस्तियों में खिलती उन नन्हीं कलियों के नाम जिनकी खुशबू चारों ओर महकेगी।